रजिस्ट्री सं. डी. एल.—33001/96 REGISTERED No. DL—33001/96

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 48] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 30, 1996 (अग्रहायण 9, 1918)
No. 48] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 30, 1996 (AGRAHAYANA 9, 1918)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	735
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	1035
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	11
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	1713
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उप-विधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1319
भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	953
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	5723
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	313
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला अनुपूरक	*

CONTENTS

	PAGE
PART I— SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	735
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1035
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	11
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1713
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)— Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories).	*
PART II—SECTION 3—SUB SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1319
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	953
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	5723
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	313
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc., both in English and Hindi	*

*Portion not received

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 1996

सं० 87-प्रेस/96—राष्ट्रपति, निम्नलिखित को उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

पुजारी मणिक्यम,
आन्ध्र प्रदेश
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 अप्रैल 1995)

पुजारी मणिक्यम सिरनापेट गांव जिला वारंगल वामपंथी उग्रवादी ग्रुपों द्वारा की गई हिंसा के खिलाफ बोलने में निडर और मुखर थे। जिसके परिणामस्वरूप वे उग्रवादियों का निशाना बने।

प्रतिबंधित उग्रवादी ग्रुप ने पुजारी मणिक्यम और उनके चचेरे भाई आदिनारायण से पार्टी फंड के लिए सिरनापेट गांव वालों से 6 लाख रुपए एकत्र करने को कहा। 20-4-95 को सायं करीब 7.30 बजे जब पुजारी मणिक्यम ने उनकी मांग पूरी करने में असमर्थता जताई तो दालम नेता धर्मण्णा ने अपने साथियों से दोनों पुजारी भाइयों के हाथ पीछे बांधने के लिए कहा। तदनुसार दालम सदस्यों ने पहले पुजारी आदिनारायण के हाथ बांधे पर वह चौकन्ना हो गए और उनके चंगुल से बचने के लिए भागे। उग्रवादियों ने उनका पीछा किया और कुल्हाड़ी मारकर उनकी हत्या कर दी।

अपनी जान का खतरा भांपकर पुजारी मणिक्यम ने मरते दम तक लड़ने का निश्चय किया। जब उग्रवादी उसकी ओर बढ़े तो उसने हाथ से एक उग्रवादी की छाती पर जोरदार प्रहार किया जिसके परिणामस्वरूप उसने खून की उल्टी की और उसी क्षण उसने दम तोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने एक दूसरे उग्रवादी पर अपने घूंसे से जोरदार प्रहार किया। इसके परिणामस्वरूप वह उग्रवादी जमीन पर गिर गया और बाद में उसकी मृत्यु हो गई। इसी समय उसकी आंखों पर टार्च की रोशनी फेंकी गई और दालम के शेष सभी सदस्य उस पर झपट पड़े और कुल्हाड़ी से प्रहार कर उसे मौत के घाट उतार दिया। अपनी मृत्यु से पहले मणिक्यम ने दालम नेता धर्मण्णा को पकड़कर उसे घायल कर दिया।

इस प्रकार पुजारी मणिक्यम ने यह जानते हुए कि उनकी मृत्यु सन्निकट है अनुकरणीय एवं उत्कृष्ट वीरता प्रदर्शित की और वे अपने साहसिक कार्य से युवकों के लिए प्रेरणा के स्रोत बने।

सुधीर नाथ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं० 88-प्रेज/96—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को शत्रु का मुकाबला करने में वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. कैप्टन साहिल शर्मा
(आई० सी०-51806)
आर्टिलरी (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 फरवरी, 1995)

आर्टिलरी के 110 फील्ड रेजिमेंट के साथ संबद्ध 207 फील्ड रेजिमेंट के कैप्टन साहिल शर्मा ने "आपरेशन मेघदूत" में बिलाफोंडला ग्लेशियर में अग्र निगरानी चौकी का कार्य स्वेच्छा से स्वीकार किया और अपने कार्यकाल में उन्होंने शत्रुपक्ष की निगरानी चौकी छह बंकर एक फाइबर कांच की झोंपड़ी गोलीबारूद की भारी मात्रा ध्वस्त की और 105 मि० मी० तोपों को निष्क्रिय किया।

22 फरवरी 1995 को 1300 बजे शत्रुपक्ष की श्री पिपल चौकी को घेरने के आदेश मिलने पर उन्होंने तोपों से गोलीबारी शुरू की। 1500 बजे शत्रुपक्ष ने सही और भारी मात्रा में एयर बर्स्ट आर्टिलरी फायर करके हमले का प्रतिकार किया। उन्होंने बमुश्किल 10 राउंड के ही निर्देश दिए होंगे कि एयर बर्स्ट छर्रों के सिर पर लगने की वजह से वे अपने स्थान पर ही अटक गए। अविरल

रक्त-प्रवाह होने के बावजूद वे जब तक गोलीबारी के निर्देश देते रहे जब तक कि शत्रुपक्ष की चौकी पूर्णतः ध्वस्त नहीं हो गई। 30 डिग्री सेल्सियस से भी कम तापमान और 90 कि० मी० प्रति घंटे की गति से चल रही तीव्र वायु का सामना करते हुए इस अफसर ने शत्रुपक्ष की भीषण गोलीबारी का मुकाबला किया और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की नितांत परवाह न करते हुए उस चौकी पर अपनी आर्टिलरी से गोलीबारी करने के निर्देश देते रहे जब तक कि उनके शरीर में रक्त की अंतिम बूंद भी शेष रही । बाद में बेस कैम्प में इस अधिकारी की उसे लगी चोटों की वजह से मृत्यु हो गई।

इस प्रकार कैप्टन साहिल शर्मा ने अटूट साहस व्यावसायिक कुशलता, समर्पण-भावना और परिपक्वता का परिचय देकर शत्रु का सामना करते हुए सौंपे गए संक्रियात्मक कार्य को पूरा करने से सर्वोच्च बलिदान किया।

2. 4055685 हवलदार सुरेन्द्र सिंह
गढ़वाल राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 जून, 1995)

15 जून 1995 को 4 गढ़वाल राइफल्स के हवलदार सुरेन्द्र सिंह सियाचिन ग्लेशियर में सबसे दूर तथा दुर्गम्य चौकी टाइगर हैंडल में मोर्टार टुकड़ी के कमांडर थे। शत्रु टाइगर हैंडल पर भारी गोलीबारी कर रहे थे। हवलदार सुरेन्द्र सिंह शत्रु की गोलीबारी की परवाह न करके अपने मोर्टारों को लगातार शत्रु प्रेक्षण चौकी पर गोलाबारी करने लगे।

शत्रु की ओर से हो रहे अचूक गोलाबारी के बावजूद हवलदार सुरेन्द्रसिंह अपने साथियों का हौंसला बढ़ाते रहे और एक साथ मिल-कर मुकाबला करते रहे। जब प्रभावन तथा ठंडक के कारण मोर्टार से सदस्यों में से एक गिर पड़ा तो हवलदार सुरेन्द्र सिंह ने पोजीशन लेकर स्वयं ही मोर्टार से फायर करने लगे तथा मोर्टार पोजीशन कमांडर की ड्यूटियां भी करते रहे। –40 डिग्री सेल्सियस से नीचे के तापमान लगभग 80 कि० मी० प्रति घंटे से चल रही वायु और शत्रु की अचूक गोलाबारी के बीच हवलदार सुरेन्द्र सिंह शत्रु पर अचूक प्रतिकारात्मक गोलाबारी करते रहे।

हवलदार सुरेन्द्र सिंह मोर्टार पोजीशन पर थे तभी शत्रु की ओर से की जा रही गोलाबारी में से बम का एक टुकड़ा उनकी पीठ में आ लगा। किन्तु घाव की परवाह न करते हुए वे शत्रु प्रेक्षण चौकी पर अचूक गोलाबारी करते रहे तथा उसे निष्क्रिय कर दिया। हवलदार सुरेन्द्र सिंह ने इस प्रकार गंभीर रूप से घायल हो जाने के बावजूद मोर्टार पोजीशन छोड़ने से इंकार कर उच्च परंपराओं तथा श्रेष्ठ पराक्रम का प्रदर्शन किया। अंततः वे मूर्छित होकर वहीं गिर पड़े।

इस प्रकार हवलदार सुरेन्द्र सिंह ने उच्चकोटि की कर्तव्य-परायणता अनुकरणीय साहस का परिचय देकर शत्रु का सामना करते हुए सर्वोच्च बलिदान किया।

सुधीर नाथ
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

सं० 89–प्रेज/96—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1 मेजर बाबू राम कुशवाहा,
(आई० सी०–42655), से० मे०,
असम रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 जून, 1995)

असम रेजिमेंट के मेजर बाबू राम कुशवाहा राष्ट्रीय राइफल्स की दूसरी बटालियन में चार्ली कंपनी कमांडर की ड्यूटियां करते आ रहे हैं। इन्होंने प्राप्त की गई विशिष्ट सूचना के अनुसार जम्मू-कश्मीर के अनन्तनाग जिले में स्थित इंकिंगम गांव में 21.00 बजे आतंकवादियों के गुप्त ठिकाने पर छापा मारा।

इन्होंने अपनी तीन प्लाटूनों को साथ लेकर भागने के सभी रास्ते की नाकेबंदी करके अपनी कंपनी मुख्यालय ग्रुप के साथ आतंकवादियों के गुप्त ठिकाने पर धावा बोलकर तिमंजिली इमारत की ऊपरी मंजिल से हिज्ब-उल मुजाहिदीन के कंपनी कमांडर को पकड़ लिया।

सैन्य टुकड़ियां घेराबन्दी तोड़ने की तैयारी में लग रही थीं कि आतंकवादियों ने पकड़े गए व्यक्ति को बचकर भाग निकलने में सहायता प्रदान करने के लिए गांव के बाहर से कंपनी कमांडर के सैन्य दल पर गोलीबारी कर दी। मेजर बाबू राम कुशवाहा ने तुरन्त गोलीबारी करने वाले आतंकवादियों का पीछा किया। घुप अंधेरा ऊंची-नीची जमीन और कई नालों के होने के बावजूद इन्होंने अकेले ही दो आतंकवादियों को धराशायी कर उनसे एक ए० के० 47 राइफल, 20 राउंड समेत एक मैगजीन और हथगोला बरामद करके अपनी कमान के नियंत्रणाधीन सैनिकों की जान बचाई। हिजबुल मुजाहिदीन के कंपनी कमांडर से रातभर पुछताछ किए जाने के परिणामस्वरूप 12 जून, 1995 को आतंकवादियों के गुप्त ठिकाने से एक यूनिवर्सल मशीन गन बरामद की गई।

इस प्रकार मेजर बाबू राम कुशवाहा, से० मे० ने आतंक वादियों का सामना करते हुए असाधारण नेतृत्व के गुणों और अदम्य साहस का परिचय दिया।

2. मेजर महेश चन्द्र,
(आई० सी०–44725),
इंजीनियर्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 जून, 1995)

14 जून, 1995 को 107 इंजीनियर रेजिमेंट सेना विकास दल के मेजर महेश चन्द्र को उनके सैन्य दल के

साथ "संक्रिया गुड ममेरिटन" के तहत विकास एवं पुनर्वास कार्यों के लिए मणिपुर के चंदेल जिले में स्थित डरक् गांव में सर्वेक्षण के लिए भेजा गया था ।

जब यह दल 1600 बजे चाकपिकारोंग के समीप स्थित डरक् गांव के नजदीक पहुंचा तो इस पर विद्रोहियों ने घात लगाकर अचानक हमला कर दिया । इस हमले को रोकने के लिए मेजर महेश चन्द्र ने अपने सैन्य दल के साथ तुरन्त जवाबी गोलीबारी कर दी । इस मुठभेड़ में मेजर महेश चन्द्र के टखने और रीढ की हड्डी में लाइट मशीन गन की गोली आ लगी । गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद मेजर महेश चन्द्र इस हमले का जवाब देने के लिए दृढ़ निश्चय के साथ अपने सैन्य दल का नेतृत्व करते रहे । इस कार्रवाई के दौरान इस अफसर ने अपनी जान जोखिम में डालकर अनुकरणीय नेतृत्व के गुण और साहस का परिचय दिया । इसकी आक्रामक कार्रवाई और वैयक्तिक आदर्श से इनके जवानों की जान बच गई और हथियारों की हानि भी नहीं हुई । इनकी जान तो बचा ली गई किन्तु अधरसंगाघात हो जाने के कारण ये विकलांग हो गए हैं ।

इस प्रकार मेजर महेश चन्द्र ने विद्रोहियों का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

3. कैप्टन रामबिन्दर सिंह गिल,
(आई० सी०-48069),
विशेष सैन्य बल रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 जून, 1995)

जम्मू-कश्मीर में जाकर नाके जंगलों में अवस्थित गुप्त स्थानों का इस्तेमाल करते हुए पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से घुसपैठ कर रहे उग्रवादियों को पकड़ने के लिए विशेष सैन्य बल रेजिमेंट की 9वीं बटालियन साहसी टीम 24 जून, 1995 को निकल पड़ी । भीषण वर्षा में रात के समय शमशाबाडी पहाड़ियों पर उच्च तुंगता के उबड़खाबड़ रास्तों पर कैप्टन रामबिन्दर सिंह अपनी टुकड़ी के साथ आगे की ओर बढ़े और सतत निगरानी के पश्चात भारी लकड़ियों से अटे हुए नाले में उग्रवादियों की उपस्थिति का पता चला ।

कैप्टन रामबिन्दर सिंह गिल स्वेच्छा से गुप्त स्थानों पर चढ़ गए और रात समाप्त होते ही उग्रवादियों की खोज करने के लिए नाले की ओर आगे बढ़े । गुप्त स्थान के संतरी का पता लगने पर कैप्टन रामबिन्दर सिंह गिल आगे की ओर बढ़े और संतरी को मार डाला । फायरिंग की आवाज सुनकर उग्रवादी सजग हो गए और सैन्य टुकड़ियों पर भीषण गोलीबारी करने लगे । कैप्टन रामबिन्दर सिंह गिल अपने आदमियों को जवाबी गोलीबारी करने के आदेश दिए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना ललकारते हुए आगे बढ़े । कैप्टन रामबिन्दर सिंह गिल ने एक ग्रेनेड फेंका और वे आगे की ओर बढ़े । उन्होंने एक उग्रवादी को जो एक खंदक में से वार कर रहा था, उसके सिर पर राइफल की चोट करके मार गिराया । इसके उपरांत गोलियों की वर्षा की परवाह न करते हुए कैप्टन रामबिन्दर सिंह गिल ग्रेनेड फेंकते हुए तथा गोलीबारी करते हुए गुप्त स्थान में प्रविष्ट हुए । जब उनका गोली-बारूद समाप्त हो गया तब कैप्टन रामबिन्दर सिंह गिल ने जीवित बचे अंतिम उग्रवादी को खाली हाथों से ही कस कर जकड़ लिया ।

इस प्रकार कैप्टन रामबिन्दर सिंह गिल ने वीरता, अदम्य साहस, असाधारण कोटि के नेतृत्व और अपने साथियों की सुरक्षा के प्रति अत्यधिक सतर्कता का परिचय दिया ।

4. 2470981 हवलदार लखविन्द्र सिंह
पंजाब रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 जुलाई 1995)

20 जुलाई 1995 को एक खोजी कार्रवाई में जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में तहसील सोपोर के बूना बदूर गांव पहुंचते समय आतंकवादियों ने सैन्य टुकड़ियों पर गोलीबारी करके कृषि महाविद्यालय के स्टाफ क्वार्टरों में भाग गए । 26 पंजाब के हवलदार लखविन्द्र सिंह उस खोजी दल में शामिल थे जिसे आतंकवादियों ने एक मकान के प्रथम तल पर रोक लिया गया था ।

खोजी दल के लिए खतरा महसूस करते हुए हवलदार लखविन्द्र सिंह ने अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए और अनुकरणीय साहसर्य से अपने एक साथी को एक तरफ धकेल दिया तथा शेष खोजी दल को अपनी आड़ में ले लिया । इस प्रकार उन्होंने अपने साथियों के प्राणों की रक्षा की । तथापि इस कार्रवाई में उनके दाहिने कन्धे में गोली आ लगी ।

यह समझकर कि आतंकवादी भाग सकते हैं हवलदार लखविन्द्र सिंह ने गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद अतुलनीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए उस मकान पर धावा बोल दिया और हिजबुल मुजाहिद्दीन के एक स्वयं-भू कम्पनी कमांडर सहित दो खूंखार सशस्त्र आतंकवादियों को मार गिराया । दोनों ओर से की गई गोलीबारी में एक गोली उनके सिर में आ लगी और 20 जुलाई 1995 को वे वीरगति को प्राप्त हुए ।

इस प्रकार हवलदार लखविन्द्र सिंह ने वीरता, कर्तव्यनिष्ठा और आत्म बलिदान का परिचय दिया ।

5. 2681488 ग्रेनेडियर सुरेन्द्र सिंह मान ग्रेनेडियर्स । (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 जुलाई 1995)

22 जुलाई 1995 को 2 ग्रेनेडियर्स की डेल्टा और चार्ली नायक कंपनियों को जम्मू-कश्मीर में बडगांव जिले के सोइबग गांव में तलाशी लेने का काम सौंपा गया था । लगभग 1150 बजे यह सूचना मिली कि भाड़े पर लिए गए विदेशी आतंकवादी इस गांव में एक मकान में छिपे हुए हैं ।

2 ग्रेनेडियर्स के ग्रेनेडियर सुरेन्द्र सिंह मान ने स्वेच्छा से सबसे पहले इस मकान में घुसने की पेशकश की जब वे मकान के अन्दर पहुंचे तो उन्हें भूतल पर कोई आतंकवादी नहीं मिला । उसके बाद वे तीव्रगति से पहली मंजिल की ओर बढ़े वहां तक पहुंचने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियां लगी हुई थीं । ग्रेनेडियर सुरेन्द्र सिंह मान तेजी से सीढ़ियों की ओर जाने लगे कि इतने में आतंकवादियों ने उन पर गोलीबारी कर दी । परन्तु वे रुके नहीं और जवाबी गोली-बारी करते हुए आगे बढ़ते रहे । उन्होंने भाड़े पर लिए गए एक विदेशी आतंकवादी को तुरन्त मार गिराया और गोलिया से बुरी तरह से घायल होने के बावजूद भाड़े पर लिए गए दूसरे आतंकवादी के निकट पहुंचे और बुरी तरह से घायल होने के कारण वीरगति प्राप्त करने से पूर्व उसे भी मार गिराया ।

इस प्रकार ग्रेनेडियर सुरेन्द्र सिंह मान ने आतंकवादियों की गोलीबारी का सामना करते हुए असाधारण वीरता का परिचय देकर सर्वोच्च बलिदान किया ।

6. 2683379 ग्रेनेडियर रंजीत ग्रेनेडियर । (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 जुलाई 1995)

ग्रेनेडियर रंजीत 2 ग्रेनेडियर्स की डेल्टा कंपनी के त्वरित प्रत्याक्रमण दल में शामिल थे । इस दल ने 22 जुलाई 1995 को जम्मू-कश्मीर में सोइबग गांव में उस मकान की घेराबंदी की जिसमें भाड़े पर लिए गए विदेशी आतंकवादी छिपे हुए थे ।

मकान की घेराबंदी करते ही आतंकवादियों को आत्म-समर्पण करने के लिए चेतावनी दी गई । जब कोई जवाब नहीं मिला तो मकान पर धावा बोलने का निर्णय लिया गया । लगभग 12.15 बजे ग्रेनेडियर रंजीत ने स्वेच्छा से एक अन्य साथी के साथ मकान पर चढ़ाई करने के लिए पेशकश की । मकान में पहुंचते ही भूतल पर कोई आतंक-वादी नहीं मिला इसलिए छोटी सी सीढ़ी से चढ़कर पहली मंजिल पर हमला किया गया । आगे खड़ा उनका साथी सैनिक पहली मंजिल से दो विदेशी आतंकवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया । वह सीढ़ियों के सबसे ऊपरी सिरे पर पहुंचा और दोनों विदेशी आतंकवादियों का काम तमाम करने के बाद घायल होने के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए ।

ग्रेनेडियर रंजित बिना किसी हिचकिचाहट के अपने साथी सैनिक को छुड़ाने दौड़ पड़े पर इस बीच अलमारी के पीछे से मोर्चा लिए हुए दो अन्य विदेशी आतंकवादियों की गोलीबारी में फंस गए । भारी गोलीबारी से भयभीत हुए बिना ग्रेनेडियर रंजीत उनके निकट पहुंचे और पहले विदेशी आतंकवादी को मार गिराते समय गरदन और जांघ में गोली लगने से घायल हो गए ।

गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद ग्रेनेडियर ने दूसरे विदेशी आतंकवादी को भी मार गिराया । उसके बाद वे अपने साथी सैनिक के पास गए और उसे अपनी पीठ पर लादकर सीढ़ियों से नीचे उतार लाए । तत्पश्चात ग्रेनेडियर रंजीत गंभीर रूप से घायल होने के कारण मकान के बाहर वीरगति को प्राप्त हो गए ।

इस प्रकार ग्रेनेडियर रंजित ने अपनी जान की बाजी लगाकर अपने साथियों को बचाने में अनुकरणीय साहस और निःस्वार्थ कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

7. सैकंड लेफ्टिनेंट ललित शर्मा (एस०एम०—36231), ग्रेनेडियर

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 अगस्त, 1995)

3 ग्रेनेडियर पोस्ट के सैकंड लेफ्टिनेंट जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में समुद्र तल से 11390 फुट की ऊंचाई पर बोदम म्बल जंगल में डोमरी गली में कमांडर के रूप में तैनात थे ।

10 अगस्त, 1995 को सैकंड लेफ्टिनेंट ललित शर्मा को साथ की चौकी से होकर घुसपैठ करने की सूचना मिली । इन्होंने घुसपैठियों का पीछा किया और गहन जंगल में सुबह दस बजे उग्र-वादियों तक पहुंच गए । भारी गोलीबारी में घिर जाने से ये तथा इनका साथी घायल हो गए और इन्होंने भीषण जवाबी गोलीबारी की । घुटने से अत्यधिक रक्तस्राव होने के बावजूद ये घिसटते हुए एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक गए और अपने हल्की मशीन गन ग्रुप को तैनात कर दिया ताकि उग्रवादियों पर काबू पाया जा सके । सैकंड लेफ्टिनेंट ललित शर्मा रेडियो आपरेटर के साथ रेंगकर बाईं ओर से आगे बढ़े और भारी गोलीबारी से उग्रवादियों को असमंजस में डालते हुए उनमें से दो को मार गिराया । छिपकर की गई यह लड़ाई चार घंटे तक चली जिसमें सैकंड लेफ्टिनेंट ललित शर्मा घायल हो गए परन्तु उन्होंने सुरक्षित स्थान पर ले जाए जाने से मना कर दिया और दोपहर बाद ढाई बजे तक इस संक्रिया के सफलतापूर्वक पूरा होने तक वे लगातार लड़ाई करते रहे ।

सैकंड लेफ्टिनेंट शर्मा ने अदम्य साहसपूर्वक अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए गम्भीर रूपसे घायल होने के बावजूद मात

रहते हुए अपने साथियों को प्रेरित करके स्थिति पर नियंत्रण पा लिया। इस संक्रिया के परिणामस्वरूप भाड़े के पांच अफगान उग्रवादी मारे गए और उनसे आठ हथियार व गोला-बारूद बरामद हुआ।

इस प्रकार सैकंड लेफ्टिनेंट ललित शर्मा ने आतंकवादियों से लड़ते हुए असाधारण वीरता, अटूट भावना और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. 2673821 लांस नायक परसा राम जाट, ग्रेनेडियर्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 अगस्त, 1995)

3 ग्रेनेडियर्स के लांस नायक परसा राम जाट 10 अगस्त, 1995 को जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के बोदरामबाल जंगल में पनाह लिए उग्रवादियों का पता लगाने तथा उन्हें मारने पहुंचे खोजी दल के सदस्य थे।

घने जंगल से गुजरते समय, लांस नायक परसा राम ने कुछ हलचल देखी। जैसे ही उन्होंने सैन्य दल को सचेत किया उग्रवादियों ने स्वचालित हथियारों से उन पर भारी गोलीबारी करना शुरू कर दिया। लांसनायक परसाराम ने चट्टान के पीछे एक उग्रवादी को देखा। वे लगभग 10 मीटर तक रेंगते हुए आगे बढ़े तथा उस उग्रवादी को मार गिराया जो सैन्यदल की किसी भी कार्रवाई में प्रभावी ढंग से बाधा डाल रहा था। अचानक बाईं तरफ से एक उग्रवादी गोलियां चलाता हुआ बाहर निकला तथा परसा राम के सीने में दो और ऊरू मूल में एक गोली मारकर उन्हें घायल कर दिया मरने से पूर्व, बुरी तरह से घायल, पराक्रमी सिपाही ने उग्रवादी पर धावा बोल दिया तथा वहीं उसे गोलियों से भून दिया। कार्रवाई पूरी होने के बाद वीर योद्धा का शव मारे गए उग्रवादियों से मुश्किल से दो मीटर की दूरी पर पड़ा था।

इस प्रकार लांस नायक परसा राम जाट ने आतंकवादियों का मुकाबला करने में अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना वीरता और दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय दिया।

9. 80224997—डब्ल्यू० कंपनी हवलदार मेजर रघुराज सिंह सीमा सड़क संगठन (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 अगस्त, 1995)

1816 पायनियर कंपनी (सेना) के कंपनी हवलदार मेजर रघुराजसिंह सुरक्षा दल के इंचार्ज थे जिसके अंतर्गत 5 सैनिक पायनियरों को सेतुक परियोजना के अधीन दक्षिणी त्रिपुरा में अत्यधिक उग्रवादग्रस्त क्षेत्र में तैनात किया गया था।

11अगस्त, 1995 को जलेया सुरक्षा दल पर उग्रवादियों ने उस समय घात लगाकर हमला किया जब उनकी गाड़ी दो पहाड़ियों के बीच ढालू स्थान से गुजर रही थी। पहाड़ी के दोनों शीर्षों से सुरक्षा दल पर गोलियों की बौछार हुई। कंपनी हवलदार मेजर रघुराज सिंह तत्काल चिल्लाकर युद्ध का आह्वान किया और सुरक्षा दल को गाड़ी से बाहर कूदकर सुरक्षित स्थान पर जाने व उग्रवादियों को व्यस्त करने के लिए उकसाया। इसी दौरान इन्हें एक गोली लगी जो कि पेट के बाईं और आंतों को चीरती हुई निकल गई। गहरी चोट, दर्द और बहते हुए खून की परवाह न करते हुए इन्होंने रेंगते हुए मोर्चा संभाला और अन्तिम सांस तक उग्रवादियों का सामना किया।

इस प्रकार कंपनी हवलदार मेजर रघुराज सिंह ने अपने दो कामरेडों के अमूल्य प्राणों की रक्षा करने में वीरता, अदम्य साहस, बुद्धिचातुर्य, नेतृत्व, दृढ़ संकल्प का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान किया।

10. 3385814 लांस नायक सतनाम सिंह, सिख रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 अगस्त, 1995)

16 अगस्त, 1995 को सिख रेजिमेंट के लांसनायक सतनाम सिंह जोकि 16 राष्ट्रीय राइफल्स में तैनात थे, नागालैण्ड के मोकोकचुंग जिले के 'शिशिमी गांव में मोकोकचुंग–जुन्हेबोटो सड़क पर पहरा देने वाले दल के अग्रणी सदस्य थे।

बहुत ही सावधान रहने के कारण उन्होंने देखा कि 15–20 भूमिगत विद्रोही सड़क से 10–15 मीटर की दूरी पर घात लगाए बैठे हैं। लांस नायक सतनाम सिंह द्वारा ललकारे जाने पर उन्होंने स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी। जांघों इससे लांस नायक सतनाम सिंह के पेट के निचले हिस्से और पर घाव हो गए।

अत्यधिक घायल हो जाने पर भी लांस नायक सतनाम सिंह ने इस गंभीर स्थिति में धैर्य नहीं खोया और भारी साहस एवं वीरता का परिचय दिया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए लांस नायक सतनाम सिंह ने भूमिगत विद्रोहियों पर लगातार गोलीबारी करके, 16 अगस्त, 1995 को सुबह 7 बज कर 20 मिनट पर अपने घावों के कारण वीरगति प्राप्त करने से पूर्व भूमिगत विद्रोहियों के घात लगाकर बैठे दल के कमांडर का काम तमाम कर दिया। उनकी इस बहादुरी और उत्कृष्ट कार्रवाई के परिणाम स्वरूप भूमिगत विद्रोहियों को वह स्थान छोड़ना पड़ा जहां वे घात लगाकर बैठे थे और साथ ही उन्होंने अपने साथियों के जीवन की रक्षा भी की।

इस प्रकार लांस नायक सतनाम सिंह ने अपनी जान की बाजी लगाकर उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस और अत्यधिक कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

11. मेजर कलुवाकोलन भूषन (आई०सी०– 45685)
से०मे० , विशेष बल रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 अगस्त, 1995)

9 विशेष बल रेजिमेंट के मेजर कलुवाकोलन भूषन जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले की लोला बघाटी अल्फा दल का नेतृत्व कर रहे थे। इन्होंने घने जंगल में लगभग 9500 फुट ऊंचाई पर छिपे हुए भाड़े पर लिए गए खूंखार विदेशी आतंकवादियों के "लशकरए-तोयबा" नामक गिरोह के ठिकाने पर छापा मारने की योजना बनाई।

यह दल 26 अगस्त, 1995 को 0230 बजे कमांडो बेस पर पहुंचा। तत्पश्चात मेजर कलुवाकोलन भूषन अपने दल के पांच सदस्यों के साथ उस गुप्त ठिकाने तक गए जो विशाल और सुसंगत प्राकृतिक गुफा थी। इस दल के एक सदस्य के फिसलते ही गुप्त ठिकाने के संतरी ने खतरे का संकेत दे दिया। मेजर कलुवाकोलन, से०मे० ने अपनी जान भारी जोखिम में डालकर अपनी कार्रवाई को संरक्षण प्रदान करने के लिए हथगोला फेंकते हुए धावा बोलकर अपने उस जे०सी०ओ० को संकेत दिया जिसने अपनी ए०के० 47 राइफल से फायर करके संतरी को मार गिराया। इसके बाद बचे हुए आतंकवादियों ने गोलियों की बौछार कर दी।

मेजर कलुवाकोलन भूषन अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना आगे बढ़े किन्तु इन्हें एक आतंकवादी ने अंधेरे का फायदा उठाते हुए इनका गला दबाकर पकड़ लिया। मेजर कलुवाकोलन भूषन ने अपनी पूरी ताकत लगाकर स्वंय को आतंकवादी के चंगुल से छुड़ा लिया और उन्हें खड़ी चट्टान पर पटक कर वहीं पर मार डाला। इसके बाद इन्होंने हथगोला फेंक कर एक ही बार में दो आतंकवादियों को मार गिराया। तत: यह बहादुर अफसर गोलीबारी की बौछार के बीच से गुजर कर हथगोले फेंकता रहा और कूनहे का सहारा लेकर फायर करते हुए गुफा में छुप गया। इनके पैरों पर दो अन्य आतंकवादियों के शव गिरे हुए थे। इस कार्रवाही में इस ऊर्जस्वी एवं आक्रमण शील अफसर ने पांच आतंकवादियों का सफाया कर उनसे आठ हथियार और भारी मात्रा में उन्नत विस्फोटक यंत्र बरामद किए।

इस प्रकार मेजर कलुवाकोलन भूषन, सेना मेडल ने आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए अदम्य साहस और उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया।

12. 15102128 गनर प्रेम कुमार सिंह, आर्टिलरी
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 सितम्बर, 1995)

24 सितम्बर, 1995 को 1635 बजे जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में चाकलू गांव में स्थित औषधालय की चारों ओर से घेराबंदी करते समय आतंकवादियों ने हथगोले फेंक कर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

29 राष्ट्रीय राइफल्स के गनर प्रेम कुमार सिंह गंभीर रूप से घायल हो जाने और उनके पेट के नीचे का हिस्सा लगभग पूरी तरह से निष्क्रिय हो जाने के बावजूद रेंगकर एक आड़ के पीछे से गोलीबारी करने के ठिकाने तक पहुंचे और अपनी स्वचालित हल्की मशीन गन से स्टीक और भारी जवाबी गोलीबारी करने लगे। मंथरगति से बेहोश होने की परवाह न करते हुए उन्होंने अटल निश्चय और असाधारण साहस के साथ आतंकवादियों को उलझाए रखा।

उनकी स्टीक और निरन्तर की गई जवाबी गोलीबारी के परिणामस्वरूप आतंकवादियों पर काबू पा लिया गया और औषधालय की निकट से कारगर घेराबंदी कर ली गई परिणामत: एक बार की गई इस कार्रवाई में दस आतंकवादी मारे गए और 9ए के० राइफलें बरामद कर ली गईं।

इस प्रकार गनर प्रेम कुमार सिंह ने भारतीय सेना की उच्च परंपराओं के अनुरूप असाधारण वीरता का परिचय देकर सर्वोच्च बलिदान किया।

13. मेजर गणेश मदप्पा (आई सी–45207) कविचम कोर
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 सितम्बर, 1995)

27 सितम्बर, 1995 को कविचम कोर 36 राष्ट्रीय राइफल्स के मेजर गणेश मदप्पा को जम्मू-कश्मीर के बिजबिहारा जिले के बछरु गांव में उग्रवादियों के छिपने के स्थान पर छापा मारने का कार्य सौंपा गया था।

रात साढे आठ बजे जब उनकी कम्पनी उग्रवादियों के छिपने के स्थान की ओर बढ़ रही थी तो तीन उग्रवादियों उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी और आगे चल रहे जवान को घायल कर दिया। मेजर गणेश मदप्पा ने कुशल नेतृत्व और प्रत्युत्पन्नमति का परिचय देते हुए तत्काल उस मकान को घेर लेने का आदेश दिया और वे स्वयं दरवाजा रोकने के लिए तेजी से उस ओर बढ़े। इस तीव्र प्रतिक्रिया को देखते ही उग्रवादी निकल भागने के लिए हताशा में गोलीबारी करते हुए दरवाजे से बाहर की ओर दौड़े। मेजर गणेश मदप्पा बहादुरी से उनके निकट जाकर भिड़ गए परंतु दोनों ओर की गोलीबारी के दौरान घायल हो गए। गंभीर रूप से घायल हो जाने के बावजूद उन्होंने भाग रहे उग्रवादियों पर कूल्हे का सहारा लेकर की गई गोलीबारी से उनमें से एक को मार गिराया।

यद्यपि उनके घावों से भारी मात्रा में खून बह रहा था फिर भी अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए जमीन पर गिर जाने तक उग्रवादियों का लगातार पीछा करते रहे बाद में 27 सितबर, 1995 को रात 10 बजकर 45 मिनट पर घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। संक्रिया स्थल से जिस एक उग्रवादी का गोलियों से छलनी किया हुआ शव मिला उसकी तारिक उल-मुजाहिदीन के पाकिस्तान प्रशिक्षत उग्रवादी के रूप में पहचान की गई।

इस प्रकार मेजर गणेश मदप्पा ने अपनी जान की बाजी लगाकर उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस और अत्यधिक कर्त्तव्यपरायण का परिचय दिया।

14. 136912 गार्डसमैन गोपा कुमार आर०, गार्डस
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 15 अक्तूबर, 1995)

12वीं राष्ट्रीय राइफल्स, गार्डसमैन गोपा कुमार आर०, 15 अक्तूबर, 1995 को जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले के गडोह तहसील के सोते गांव में आकस्मिक गश्ती दल के एक सदस्य थे।

गार्डसमैन गोपा कुमार आर० ने एक मकान में कुछ संदेहास्पद हलचल देखी तथा उन्होंने गश्ती दल को सचेत किया और उसने मकान को घेर लिया। गार्डसमैन गोपा कुमार और दो अन्य साथियों के साथ मकान की तरफ बढ़ ही रहे थे कि आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरु कर दी। अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना गार्डसमैन गोपा कुमार ने मकान के निचले तल की ओर धावा बोल दिया तथा अपनी अचूक निशानेबाजी का प्रदर्शन करते हुए एक आतंकवादी पर गोली दाग दी। गिरतेसमय आतंकवादी ने गश्ती दल पर फेंकने के लिए एक हथगोला निकाला जिसे गार्डसमैन गोपा कुमार ने झपट कर छीन लिया तथा उसें एक सुरक्षित स्थान पर फेंक दिया और इस तरह इन्होंने अपने साथियों के प्राणों की रक्षा की।

इसी वक्त, एक गोली उनकी बाई आंख में लगी और उनकी खोपड़ी में धंस गई। बेहद नाजुक लुहान होने के बावजूद उन्होंने कड़ा मुकाबला किया, वहीं डटे रहे तथा अपूर्व साहस तथा अचूक निशानेबाजी से अन्य फंसे आतंकवादियो को भागने नहीं दिया। 15 अक्तूबर, 1995 को उनके निस्वार्थ एवं सर्वोच्च बलिदान के परिणामस्वरूप हिजबुल के तीन आतंकवादी मार गिराए गए तथा उनसे भारी मात्रा में हथियार और असला बरामद हुआ।

इस प्रकार गार्डसमन गोपा कुमार आर० ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता से परे एकनिष्ठ समर्पण भाव से सर्वोच्च बलिदान किया।

15. लेफ्टिनेंट कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती (आई सी-34600), से० मे० गढ़वाल राईफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 अक्तूबर, 1995)

17 अक्तूबर, 1995 को 36 राष्ट्रीय राइफल्स के लेफ्टि० कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती जम्मू-कश्मीर के बड़गाम जिले में स्थित बागम गांव में घेराबंदी और खोज कार्य करवा रहे थे। खोजी दल 0800 बजे एक मकान से स्वचालित हथियारों से की जा रही भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया।

लेफ्टि० कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती निडरता से गोलीबारी के बीच से गुजरते हुए आगे बढ़े और मकान की तीन दिशाओं से सुनियोजित ढंग से घेराबंदी करवाकर दो अन्य रैंकों के साथ पिछवाड़े से मकान में पहुंच गए। एक बड़े कमरे की तीन खिड़कियों से आतंकवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी को ध्यान में रखते हुए इन्होंने अपने साथी सैनिकों को आवेश दिया कि वे उन्हें कार्रवाई करने में बाहर से सहायता प्रदान करें। ये दृढ़ निश्चय के साथ अधखुले दरवाजे से पिछवाड़े के कमरे में घुस गए।

ये अपनी अत्यंत व्यावसायिक कुशलता से आतंकवादियों पर अचानक धावा बोलने में कामयाब रहे। इन्होंने दूसरे कमरे में हथगोला फेंका और अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना उस कमरे पर अपनी स्वचालित राइफल से गोलीबारी कर दी। इसके बाद हुई भीषण मुठभेड़ में लेफ्टि० कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती, से० मे० ने 4 दुर्दान्त आतंकवादियों और तेहरीक-उल मुजाहिद्दीन के जिला प्रशासक को गोलियों से मार डाला। इस कार्रवाई में 3 ए० के० 47 राइफलें 7 ए० के० मेगेजीन, ए० के० गोलाबारूद के 81 राउंड और 8 हथगोले बरामद किए गए।

इस प्रकार लेफ्टि० कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती, से० मे० ने शानदार नेतृत्व, पहल, कर्तव्यपरायणता और असाधारण साहस का परिचय दिया।

---

16. 4355549 नायक सोमेश्वर सैकिया, असम रेजिमेंट
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 अक्तूबर, 1995)

17 अक्तूबर, 1995 को 35 राष्ट्रीय राइफल्स की एक कंपनी को जम्मू-कश्मीर के बड़गाम जिले के गौतापुरा गांव में राष्ट्र-विरोधी तत्वों के साथ मुठभेड़ के कार्य पर तैनात किया गया था। रेजिमेंट के नायक सोमेश्वर सैकिया घेराबंदी की कार्रवाई के दौरान अपने दूसरे साथी के सहित एक हल्की मशीन गन पर तैनात थे।

पूर्वाह्न 10 बजकर 45 मिनट पर यह हल्की मशीन गन राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा एक निकटवर्ती मकान से की गई प्रभावी गोलीबारी की गिरफ्त में आ गई। उन तत्वों के प्रभावी रूप से गोलीबारी करने और लगातार हथगोले फेंकने के बावजूद नायक सोमेश्वर सैकिया उन पर लगातार प्रभावी गोलीबारी करते रहे। उन्होंने अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह नहीं की और रेंगकर राष्ट्रविरोधी तत्वों के कब्जे वाले उस मकान तक पहुंच गए जहां से प्रभावी गोलीबारी की जा रही थी। उन्होंने मकान के निकट जाकर एक हथगोला फेंक कर राष्ट्रविरोधी तत्व का काम तमाम कर दिया जो हमारे सैनिकों पर एम-80 एमएमजी से गोलीबारी कर रहा था। नायक सोमेश्वर सैकिया की इस असाधारण साहसपूर्ण कार्रवाई के दौरान एक अन्य मकान से राष्ट्रविरोधी तत्व द्वारा की जा रही गोलीबारी से उनके पेट में एक गोली आ लगी। गंभीर रूप से घायल हो जाने के बावजूद नायक सोमेश्वर सैकिया ड्यूटी की अपेक्षाओं से भी आगे बढ़कर असाधारण वीरता का परिचय देते हुए अकेले ही दूसरे राष्ट्रविरोधी तत्व पर टूट पड़े और उसका काम तमाम कर दिया।

नायक सोमेश्वर सैनिकया ने इस कार्रवाई में सर्वोच्च बलिदान दिया और 17 अक्तूबर 1995 को रात 8 बजकर 15 मिनट पर घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। अंतत : इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप चार विदेशी भाड़े के उग्रवादियों सहित छः उग्रवादियों को उस मकान से बाहर किया जा सका।

इस प्रकार नायक सोमेश्वर सैकिया ने आतंकवादियों की तीव्र गोलीबारी का सामना करने में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता किए बिना उत्कृष्ट वीरता और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

17. 1580381 सैपर बलबीर सिंह इंजीनियर्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 अक्तूबर 1995)

17 और 18 अक्तूबर, 1995 को जम्मू कश्मीर के श्रीनगर जिले की गदरबाल सहसील के करहमा गांव में 13 राष्ट्रीय राइफल ने खोज एवं मुठभेड़ कार्रवाई की। 17 अक्तूबर, 1995 को दोपहर के लगभग 1.30 बजे आतंकवादियों ने अपने सैन्य दलों पर गोलीबारी की और लगभग छः घंटों तक भीषण गोलाबारी हुई। यह संपर्क होने के समय 13 राष्ट्रीय राइफल के सैपर बलबीर सिंह भी उनमें से एक स्काउट थे। इस जवान ने असाधारण सशस्त्र कौशल से एक आतंकवादी को धराशाई होने का मौका दिए बिना मार गिराया। बाद में आत्मरक्षा की परवाह न करते हुए और अपने कर्त्तव्य को स्वयं से अधिक महत्व देते हुए वे अपने साथी सहित आतंकवादियों को भागने का मौका दिए बिना उनके पीछे भागे और उन्होंने दो मकानों के बीच उन्हें घेर लिया।

भीतर छिपे आतंकवादियों ने जवानों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। सैपर बलबीर सिंह ने स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए तथा इस तथ्य को समझते हुए कि अंधेरा तेजी से बढ़ रहा है, खिड़की को तोड़कर, कमरे में धावा बोल दिया। आतंकवादी से हाथापाई हुई और उसे मार गिराया। इस प्रक्रिया में उनकी गर्दन में गोली लगी और 17 अक्तूबर, 1995 को दो आतंकवादियों को मारने तथा दो ए० के० राइफलें बरामद करने के बाद अस्पताल ले जाते हुए उनकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार सैपर बलबीर सिंह ने सर्वोच्च बलिदान देने से पूर्व अनुकरणीय कर्त्तव्यपरायणता, असाधारण साहस एवं हथियारों का उपयोग करने में उच्चकोटि के कौशल का परिचय दिया।

18. मेजर बलराज शर्मा (आई० सी०-49611), कवचित कोर

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 नवम्बर 1995)

18 नवम्बर, 1995 को सुबह 9 बजकर 25 मिनट पर लगभग 20 विद्रोहियों ने मोंगबंग में 8 मणिपुर राइफल्स की एक टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया और तीन नागरिकों को हत्या कर दी तथा बस में यात्रा कर रहे दो अन्य व्यक्तियों को घायल कर दिया।

गोलीबारी की आवाज सुनकर 90 कवचित रेजीमेंट के मेजर बलराज शर्मा जोकि सुंगनू चौकी पर तैनात 10 जम्मू कश्मीर लाइट इन्फेन्ट्री के साथ संबद्ध थे तत्काल तीव्र प्रतिक्रिया दल सहित घटना स्थल पर पहुंचे। इस अफसर ने दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र एवं यकपी और मणिपुर नदियों के सीने तक गहरे जल में से होकर रास्ता तय करते हुए भागते। विद्रोहियों का पीछा करने में साढ़े तीन घंटों तक अपने दल का नेतृत्व किया तथा मोंगबंग गांव के निकट दोपहर लगभग एक बजे उनसे संपर्क स्थापित किया।

स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी करते विद्रोहियों के साथ उनकी गंभीर मुठभेड़ शुरु हो गई। इसके बावजूद अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए निर्भीकतापूर्वक अपने मोर्चे की स्थिति से 15 मीटर तक रेंगकर आगे बढ़े। इन्होंने स्वयं हमला बोल दिया और इनके प्रहार ग्रुप पर हथगोला फेंकने का प्रयास कर रहे विद्रोहियों का काम तमाम कर दिया और उनकी हल्की मशीन गन पर कब्जा कर लिया। इस अफसर के वीरतापूर्ण कृत्य से इस सिक्रया की समग्र सफलता में सहायता मिली जिसके परिणामस्वरूप सात विद्रोही मारे जा सके एक को पकड़ लिया गया और उनसे एक हल्की मशीन गन एवं सेल्फ लोडिंग राइफल सहित भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद किया जा सका।

इस प्रकार मेजर बलराज शर्मा ने उत्कृष्ट वीरता, अदम्य उत्साह एवं कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

---

19. कैप्टन रमेश सिंह (आई० सी०-48334), सेना सेवा कोर (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 3 जनवरी, 1996)

3 जनवरी, 1996 को 13 राष्ट्रीय राइफल्स को जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर जिले के तुलामुला और रामपुर गांव में आतंकवादियों से मुठभेड़ हो गई। आतंकवादियों ने सुबह सवा दस बजे टुकड़ियों पर गोलीबारी की जिसमें एक हताहत हुआ।

सेना सेवा कोर के कैप्टन रमेश सिंह ने दोपहर 1.30 बजे देखा कि कुछ आतंकवादी एक तिमंजिले मकान से स्निपर और पिकास से गोलीबारी कर रहे है । स्थिति की गंभीरता और टुकड़ियों के लिए खतरे का अहसास होते ही कैप्टन रमेश सिंह मकान के अंदर गए और आतंकवादियों के गुट पर धावा बोल दिया और उनमें से एक को उसी समय मार डाला । इस कार्रवाई में कैप्टन रमेश सिंह की टांग जख्मी हो गई । किंतु इस साहसी अफसर ने अपने समूह सहित मकान के अंदर छिपे अन्य आतंकवादियों को फंसाए रखा ।

तभी एक आतंकवादी ने कैप्टन रमेश सिंह पर हमला किया जिन्होंने बुरी तरह घायल तथा गंभीर स्थिति होने के बावजूद एक आतंकवादी को मौके पर ही मार गिराया । ऐसा करते हुए वे गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्होंने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया । मारे गए आतंकवादियों की हिजबुल मुजाहिद्दीन तथा फयाज के एक आत्मघाती दस्ते अस बदर के डिप्टी चीफ गजल भानी एक पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकवादी के रूप में पहचान की गई । उनसे एक स्निपर राइफल, एक ए० के०-56 तथा एक पिस्तौल बरामद हुई ।

इस प्रकार कैप्टन रमेश सिंह ने असाधारण वीरता, कर्तव्यपरायणता, सामरिक सूजबूझ का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान किया ।

20. मेजर राजीव कुमार लाल (आई० सी०-46690), गार्डस (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 जनवरी, 1996)

13 गार्डस के स्थापना दिवस पर 4 जनवरी, 1996 को 12.30 बजे जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर जिले में जैनाकुट गांव में विदेशी आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर 13 गार्डस के मेजर राजीव कुमार लाल ने अपनी कंपनी को खोजा कार्रवाई के लिए तीव्रता से गठित किया ।

गांव में खोजी कार्रवाई करते समय यह अफसर ओट में छिपे आतंकवादियों के एक समूह की प्रभावी गोलीबारी में घिर गया । यह अफसर किसी प्रकार उनके समीप जा पाने में सफल हो गया और उन्हें व्यक्तिगत रूप से भीषण गोलीबारी में उलझा दिया । इस अफसर पर और इसके सैन्य दल पर एक मकान की अटारी से आतंकवादियों के एक अन्य समूह ने छिपकर गोली चलाई जिससे यह अफसर बुरी तरह घायल हो गया ।

बुरी तरह घायल होने के बावजूद इस अफसर ने अदम्य साहस का परिचय दे कर उन भागते हुए आतंकवादियों को उलझाए रखा, इसकी नाड़ी की गति धीमी पड़ती जा रही थी और चेतना जवाब दे रही थी परन्तु इस सब पर नियंत्रण रखते हुए इन्होंने अपना दम तोड़ने से पूर्व दोनों आतंकवादियों को गोली मारकर मार गिराया ।

अफसर और इसके सैन्य दल के सम्मुख आए भारी खतरे का सामना करने में इनके द्वारा प्रदर्शित अनुकरणीय पुरुषार्थ, दृढ़ता और दृढ़ संकल्प इन्हें भारतीय सेना की सच्ची परंपराओं के अनुरूप असाधारण गुणता सम्पन्न नायक के रूप में प्रस्तुत करता है ।

इस प्रकार मेजर राजीव कुमार लाल ने असाधारण साहस, धैर्य एवं दृढ़ संकल्प, अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए कर्तव्यपरायणता तथा सर्वोच्च बलिदान की भावना का परिचय दिया ।

---

21. सेकन्ड लेफ्टिनेंट गुरदीप सलारिया (आई० सी०-52793), पंजाब रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 जनवरी, 1996)

23 पंजाब के सेकंड लेफ्टिनेंट गुरदीप सलारिया 81 माउंटेन ब्रिगेड की घटक प्लैटून की कमान कर रहे थे । इन्होंने दो कुख्यात दुर्दांत आतंकवादियों का सफाया करने के विशेष कार्य हेतु तीन मंजिला भवन का घेरा डाल दिया ।

सेकंड लेफ्टिनेंट सलारिया ने जम्मू-कश्मीर के पूलवामा जिले के गांव पंजगांव में 9 जनवरी, 1996 को रात साढ़े दस बजे स्वयं कुछ गुप्त सूचना एकत्र की । इसके परिणामस्वरूप रातभर गोलीबारी जारी रही ।

10 जनवरी, 1996 को सुबह साढ़े छह बजे सेकंड लेफ्टिनेंट गुरदीप सलारिया ने अपने साथियों को जो कि दिन के प्रकाश में उग्रवादियों की गोलीबारी की गिरफ्त में आ गए थे को भारी खतरे में देखकर अनुकरणीय साहसपूर्वक अपनी जान को जोखिम में डालकर भारी गोलीबारी के बीच खिड़की से तीन हथगोले अन्दर फेंके । इससे एक उग्रवादी खिड़की से बाहर कूद पड़ा और सेकंड लेफ्टिनेंट गुरदीप सलारिया ने आतंकवादियों पर गोलीबारी की पोजीशन बनाने के लिए उस खिड़की के पास मोर्चा लिया जहां से दूसरा आतंकवादी प्रभावी गोलीबारी कर रहा था । उसी समय सेकंड लेफ्टिनेंट गुरदीप सलारिया को छाती और कोख में गोली की रगड़ लगी जिससे वह बुरी तरह घायल हो गए । अपनी चोट की परवाह न करते हुए उन्होंने फायरिंग जारी रखी और अंततः आतंकवादी को मार गिराया । जब उन्हें उस जगह से हटाया जा रहा था तभी अपने घावों के के कारण उनकी मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार सेकंड लेफ्टिनेंट गुरदीप सलारिया ने उत्कृष्ट नेतृत्व गुणन, दृढ़ संकल्प और आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया ।

22. मेजर अनुराग श्रीवास्तव (मरणोपरांत)

(आई० सी०–45179)

यांत्रिक इन्फैंट्री ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 जनवरी 1996)

2 असम राइफल की यांत्रिक इन्फैंट्री के मेजर अनुराग श्रीवास्तव मणिपुर में सेनापति जिले में नेशनल सोशलिस्ट काऊंसिल आफ नागालैंड के क्षेत्रीय मुख्यालय का विध्वंस करके पहले ही अद्भुत साहस और असाधारण नेतृत्व का परिचय दे चुके थे ।

मार्च 1995 में इस यूनिट के जम्मू कश्मीर में शामिल किए जाने के परिणामस्वरूप इस अफसर ने कम्पनी स्तर की कार्रवाईयों की परिकल्पना की; और उनकी योजना बनाई तथा उनका निष्पादन किया जिसके फलस्वरूप अल बर्क के एक डिवीजनल कमांडर, हिजबुल मुजाहिदीन के दो कमांडरों और हिजबुल मुजाहिदीन के दो बटालियन कमांडरों तथा उसके 5 खूंखार आतंकवादियों को मार गिराया ।

जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के जगारपुर में 4–6 आतंकवादियों के मौजूद होने की आसूचना की पुष्टि होने पर 11 जनवरी 1996 को 21 असम राइफल द्वारा कार्रवाई शुरू की गई ।

मेजर अनुराग श्रीवास्तव को इस गांव की घेराबंदी करने और विशिष्ट खोज करने का कार्य सौंपा गया । लगभग 0800 बजे जब खोजी दल आगे बढ़ा तो वह राष्ट्रविरोधी तत्वों से की जा रही भारी गोलीबारी से घिर गया जिससे एक अन्य रैंक घायल हो गया । स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए मेजर अनुराग श्रीवास्तव ने घायल हुए साथी को बाहर निकालने का प्रयास किया परन्तु यूनिवर्सल मशीन गन की गोलियों की घातक बौछार के कारण वे ऐसा नहीं कर सके । उन्होंने गोलीबारी को, जिनका झाड़ियों में अच्छी तरह से छिपे हुए आतंकवादियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था, कम करते हुए अपनी आर० एल० तथा हल्की मशीन गन सैन्य टुकड़ियों को तत्काल अपने आसपास तैनात किया ।

घायल साथी को तत्काल वहां से हटाने को उच्च प्राथमिकता देते हुए मेजर अनुराग श्रीवास्तव ने आतंकवादी को समाप्त करने का निर्णय लिया वे तत्क्षण अकेले ही छिपते-छिपाते आतंकवादी के पास पहुंच गए । अपनी सुरक्षा की रंचमात्र भी परवाह किए बिना और बेजोड़ साहस का असाधारण प्रदर्शन करते हुए उन्होंने शेष रास्ता कोहनियों के बल रेंगते हुए पार किया और गोलियों की भयंकर बौछार के बीच गोली चलाते हुए आतंकवादी पर आक्रमण कर उसे मार गिराया ।

बाद में दोनों ओर से गोलीबारी में मेजर अनुराग श्रीवास्तव के सिर में गोली प्राणघातक चोट लगी और इस प्रकार उन्होंने अपने घायल साथी को बचाने के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया ।

इस प्रकार मेजर अनुराग श्रीवास्तव ने भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप असाधारण वीरता अपने शस्त्रधारी साथियों के प्रति निष्ठा असाधारण कर्तव्यपरायणता एवं वैयक्तिक नेतृत्व का परिचय दिया ।

---

23. 13618598 पैराट्रूपर महिमान सिंह नयाल (मरणोपरांत)
पैरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 जनवरी 1996)

27 जनवरी 1996 को 3 पैरा की एक टुकड़ी को नागालैंड के दीमापुर नगर में एक अति महत्वपूर्ण विद्रोही को पकड़ने के लिए भेजा गया था । पैराशूट रेजिमेंट के तीसरी बटालियन के पैराट्रूपर महिमान इस टुकड़ी में शामिल थे । उक्त टुकड़ी जब यूनिट में वापस आ रही थी तो भूमिगत विद्रोहियों ने उस पर घात लगाकर हमला कर दिया ।

इस हमले में दो हथगोले फेंके गए थे जिनमें से एक वाहन के अन्दर गिरा जबकि दूसरा हथगोला वाहन के तिरपाल में फंस गया । पैराट्रूपर महिमान ने गंभीर खतरे को भांपकर अपने साथियों को वाहन से कूद जाने के लिए आवाज लगाई और उसी समय उन्होंने हथगोले को बाहर गिराने के लिए तिरपाल को झटका दिया किन्तु दुर्भाग्यवश वह हथगोला लुढ़क कर वाहन में ही गिर गया । यह अच्छी तरह से जानते हुए कि हथगोला किसी भी समय फट जाएगा उन्होंने फुर्ती से हथगोला उठा लिया और फैंक दिया । लेकिन उक्त हथगोला उनके सामने ही फट गया और वे गंभीर रूप से घायल हो गए । उनका यह वीरतापूर्ण प्रयास व्यर्थ नहीं गया क्योंकि दूसरों के प्राणों की रक्षा हुई । तथा विद्रोहियों ने स्वचालित हथियारों से भीषण गोलीबारी शुरू कर दी और दूसरे ग्रुप ने उनके घायल साथियों का हथियार छीनने के लिए धावा बोल दिया । महिमान सिंह ने अपनी शेष शक्ति से अपनी राइफल उठा ली और हमलावारों पर गोलियां बरसाकर एक को घायल कर दिया उनके अत्याधिक धैर्य और दृढ़ संकल्प से भूमिगत विद्रोही भाग खड़े हुए तथा हथियार लेकर भागने का उनका प्रयास विफल हो गया वे 27 जनवरी 1996 को सायंकाल 6 बजकर 15 मिनट पर वीरगति को प्राप्त हुए ।

इस प्रकार पैराट्रूपर महिमान सिंह नयाल ने उत्कृष्ट वीरता एवं असाधारण साहस का परिचय दिया और कर्तव्य परायणता हेतु अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए सर्वोच्च बलिदान किया ।

24. 13619642 पैराट्रूपर प्रकाश चन्द्र (मरणोपरांत) पैरा० ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 जनवरी, 1996)

27 जनवरी, 1996 को पैराशूट रेजिमेंट की तीसरी बटालियन की एक टुकड़ी ने नागालैंड के दीमापुर में महत्वपूर्ण भूमिगत विद्रोही को पकड़ लिया । पैराशूट रेजिमेंट की तीसरी बटालियन की अल्फा कंपनी के पैराट्रूपर प्रकाश चन्द्र इस टुकड़ी में शामिल थे । जब यह टुकड़ी धर-पकड़ करके यूनिट लाइन में वापस आ रही थी तभी भूमिगत विद्रोहियों ने उस टुकड़ी पर घात लगाकर हमला कर दिया ।

भूमिगत विद्रोहियों ने सैन्य वाहन में दो हथगोले फेंकते हुए यह हमला किया । पैराट्रूपर प्रकाश चन्द्र ने हथगोला उठाकर वाहन से बाहर फेंक दिया । इससे वाहन में कई लोग हताहत होने से बच गये ।

हथगोले को बाहर फेंकने के पश्चात पैराट्रूपर प्रकाश चन्द्र अपने हथियार से गोलियां बरसाते हुए वाहन से कूद पड़े और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना भूमिगत स्वचालित लाइट मशीन गन से वाहन की ओर हो रही गोलीबारी की ओर धावा बोल दिया । हालांकि इस कार्रवाई में प्रकाश चन्द्र के सीने में गोली आ लगी और घटना स्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हुए । इस कार्रवाई से भूमिगत अंधेरे की आड़ लेते हुए आतंकित होकर भाग खड़े हुए ।

इस प्रकार पैराट्रूपर प्रकाश चन्द्र ने असाधारण साहस, सूजबूझ, उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता और आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया ।

---

25. 2789437 सिपाही गाढवे जयदीप नारायण, मराठा लाइट इन्फैंट्री । (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 फरवरी, 1996)

15 मराठा लाइट इंफैंट्री के सिपाही गाढवे जयदीप नारायण 15 मराठा लाइन इन्फैंट्री की डेल्टा कंपनी द्वारा 5-6 फरवरी, 1996 की रात को शुरू की गई संक्रिया का हिस्सा थे । इस संक्रिया का लक्ष्य नागालैंड के त्यूनसंग जिले के गांव लोमीफैंक, जहां कि नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैंड (एन० एस० सी० एन०) (आई०एफ० एम०) के उच्च रैंक के भूमिगत दुर्दांत उग्रवादियों ने अपना डेरा डाल रखा था, में इन उग्रवादियों के ठिकाने को नष्ट करना था ।

डेल्टा कंपनी कार्य बल जिसमें 30 चयनित कार्मिक शामिल थे, 5 फरवरी, 1996 को रात 11 बजे लोंगीफैंक गांव में पहुंचा । 6 फरवरी, 1996 को रात 1 बजे उग्रवादियों की निगाह से बचते हुए अत्यंत आश्चर्यजनक रूप से उनकी घेराबंदी कर दी और अवरोध खड़े कर दिए । छापामार दल जिसके आगे सिपाही गाढवे थे और उनके पीछे मेजर मुखर्जी चल रहे थे छिपते हुए उग्रवादियों की शरणस्थली के 50 गज निकट पहुंच गए । अचानक उग्रवादियों ने छापामार दल पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी । निर्भीक सिपाही गाढवे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा व जीवन की तनिक भी परवाह न करते हुए उग्रवादियों की कारगर एवं भारी गोलीबारी के बावजूद उन पर धावा बोल दिया । इस प्रक्रिया में उनके पेट में गोली आ लगी । सिपाही गाढवे ने गम्भीर रूप से घायल हो जाने पर भी उच्चकोटि की उत्कृष्ट वीरता का परिचय देते हुए धावा जारी रखा और आपरेशनल कमांडर के अंगरक्षक को मार गिराया तथा उसके बाद तब तक कारगर रक्षात्मक गोलीबारी करते रहे जब तक कि उग्रवादियों के छिपने की जगह को नष्ट करके उन्हें बाहर नहीं निकाल दिया गया । अंततः सिपाही गाढवे ने 6 फरवरी, 1996 को दीमापुर के सेना अस्पताल ले जाए जाते समय सुबह 8 बजकर 25 मिनट पर सर्वोच्च बलिदान दिया ।

इस प्रकार सिपाही गाढवे जयदीप नारायण ने उत्कृष्ट वीरता, कर्तव्यपरायणता और आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया ।

सुधीर नाथ,
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, 15 अगस्त, 1996

सं० 90-प्रेस/96—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अधिकारियों/कार्मिकों को उनके साहसिक कार्यों के लिए "सेना मेडल/आर्मी मेडल" प्राप्त करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट कर्नल लखपत सिंह यादव (आई० सी०—34972), कुमाऊं ।
2. मेजर संजय कुमार थापा (आई०सी०—39454), विशेष बल रेजिमेंट ।
3. मेजर रणजीत सिंह देशवाल (आई० सी०—41877) गाईस ।
4. मेजर अशोक मिश्रा (आई० सी०—50421), कुमाऊं ।
5. मेजर मो० जाहिद उल्लाह सिद्दिकी (आई० सी०—45142), कवचित कोर ।
6. मेजर हरेश पी० पटेल (आई० सी०—41108), सेना विमानन ।
7. मेजर परमजीत सिंह (आई० सी०—40353), विशेष बल रेजिमेंट ।

8. मेज, संजीव भट्टी (आई० सी०–40640), ग्रेनेडियर्स ।

9. मेजर खालिदअहमदखान (आई० सी०–37641), गढ़वाल राइफल्स ।

10. मेजर नरेंद्र शेखरन (आई० सी०–50663) इंजीनियर्स ।

11. मेजर हरि दत्त (आई० सी०–46467), तोपखाना (मरणोपरांत) ।

12. मेजर रोहित बनर्जी (आई० सी०–49876), राजपूताना राइफल्स ।

13. मेजर अभिषेक राज बाजपाई(आई० सी०–44042) मैकनाइज्ड इन्फैन्ट्री ।

14. मेजर सुखजीत सिंह (आई० सी०–38829), जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स ।

15. मेजर मृत्यु उदय कुमार राजू (आई० सी०–39645), पैरा० ।

16. मेजर रमेश दिगम्बर पुनेकर (आई० सी०–35938), पैरा० ।

17. मेजर सतेन्द्र वीर सिंह (आई० सी०–37691), जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स ।

18. मेजर वर्गीस डेविड एब्रहाँ (आई० सी०–40800), इलेक्ट्रिकल एवं मेकेनिकल इंजीनियर्स ।

19. कैप्टन अभिजीत चन्द्र (आई० सी०–50591), राजपूताना राइफल्स ।

20. कैप्टन शंकर गोपीनाथन (आई० सी०–51551), बिहार रेजिमेंट ।

21. कार्यकारी कैप्टन संजय आर० ठाकुर (टी० ए०–42193), प्रादेशिक सेना ।

22. कैप्टन रमनजीत सिंह कपानी (आई० सी०–46400), आर्टिलरी ।

23. कैप्टन महावीर सिंह कँवर (आई० सी०–49833), इंजीनियर्स ।

24. कैप्टन अजय तिवारी (आई० सी०–49441), सेना सेवा कोर ।

25. कैप्टन रोहित कौशल (आई० सी०–49758), पंजाब (मरणोपरांत) ।

26. कैप्टन चैतन्य लिमये (आई० सी०–49885), पैरा० ।

27. सैकण्ड लेफ्टिनेंट मयंक उपाध्याय (एस० एस०–35806), गोरखा राइफल्स ।

28. (जे० सी०–196312) सूबेदार देवी प्रसाद प्रधान, गोरखा राइफल्स ।

29. (जे० सी०–141560) सूबेदार भाग सिंह, महार रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

30. (जे० सी०–178215) सूबेदार चन्द्र मनी, ग्रेनिडियर्स (मरणोपरांत) ।

31. (जे० सी०–185052) सूबेदार जगत सिंह, कुमाऊं रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

32. (जे० सी०–3000057) नायब सूबेदार नर बहादुर राना, असम राइफल्स ।

33. (जे० सी०–629061) नायब सूबेदार बाबू राम क्षेत्री, गोरखा राइफल्स ।

34. (जे० सी०–2200313) नायब सूबेदार सिंह बहादुर गुरुंग, असम राइफल्स ।

35. (जे० सी०–448182) नायब सूबेदार धुड़ा राम वर्मा, ग्रेनेडियर्स (मरणोपरांत)।

36. (जे० सी०–2300089) नायब सूबेदार सलोप सिंह कुप्रवान, असम राइफल्स ।

37. (जे० सी०–2850326) नायब सूबेदार गोपाल दत्त शर्मा, असम राइफल्स ।

38. (जे० सी०–592178) नायब सूबेदार छंकार सिंह, जम्मू और कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री ।

39. (2666618), कंपनी हवलदार मेजर प्रताप सिंह, ग्रेनेडयिर्स ।

40. (13674059) हवलदार सुरेश सिंह, गार्ड्स ।

41. (4061180) हवलदार हिम्मत सिंह, गढ़वाल राइफल्स ।

42. (5843342) हवलदार धन बहादुर छेत्री, गोरखा राइफल्स ।

43. (5243303) हवलदार एम० बहादुर पुन, गोरखा राइफल्स ।

44. (14540074) हवलदार विद्या सागर सिंहा, वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियर्स (मरणोपरांत) ।

45. (5842258) हवलदार कृष्ण बहादुर क्षेत्री गोरखा राइफल्स (मरणोपरांत) ।

46. (2675058) नायक ओम प्रकाश, ग्रेनेडियर्स ।

47. (2586677) नायक अशोक करोशी, मद्रास (मरणोपरांत) ।

48. (4464826) नायक शोकीन सिंह, सिख लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरांत) ।

49. (4176173) नायक भवन सिंह, कुमाऊं (मरणोपरांत)।

50. (2587051) नायक सतीश कुमार एम०, मद्रास (मरणोपरांत)।

51. (14481237) लांस नायक राज कुमार, आर्टिलरी।

52. (2679855) लांस नायक राम अवतार सिंह, ग्रेनेडियर्स (मरणोपरांत)।

53. (2475314) लांस नायक चांद सिंह, पंजाब।

54. (4067365) लांस नायक सते सिंह रावत, गढ़वाल राइफल्स (मरणोपरांत)।

55. (2588922) लांस नायक चिन्नप्पा गोविन्दन, मद्रास (मरणोपरांत)।

56. (4181521) लांस नायक विजय पाल सिंह, कुमाऊं (मरणोपरांत)।

57. (9083461) लांस नायक शेर अली खान, जम्मू और कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री।

58. (2474802) लांस नायक जगदेव सिंह, पंजाब (मरणोपरांत)।

59. (7239922) कार्यकारी लांस दफादार सुख देव घोष, रिमाउंट पशु चिकित्सा कोर।

60. (2988959) सिपाही मोन सिंह, यांत्रिक इन्फैन्ट्री (मरणोपरांत)।

61. (2478211) सिपाही कामेकर सिंह, पंजाब।

62. (4362669) सिपाही फेमन के० संगमा, असम राइफल्स।

63. (4179555) सिपाही श्याम सिंह, कुमाऊं (मरणोपरांत)।

64. (4068703) राइफल मैन गुड्डू लाल, गढ़वाल राइफल्स।

65. (5753387) राइफल मैन तास बहादुर गुरुंग, गोरखा राइफल्स (मरणोपरांत)।

66. (104650) राइफलमैन सन्दु सुराडकर, असम राइफल्स (मरणोपरांत)।

67. (2887069) राइफलमैन महेन्द्र सिंह, राजपूताना राइफल्स।

68. (5847350) राइफलमैन प्रेम छेत्री, गोरखा राइफल्स (मरणोपरांत)।

69. (2103088) राइफलमैन रवि थापा, असम राइफल्स।

70. (3101169) राइफलमैन रमेश प्रसाद, असम राइफल्स।

71. (13750573) राइफलमैन पवन सिंह, जम्मू और कश्मीर राइफल्स (मरणोपरांत)।

72. (2884654) राइफलमैन सुरेन्द्र कुमार, राजपूताना राइफल्स (मरणोपरांत)।

73. (2886000) राइफलमैन कवंरपाल सिंह, राजपूताना राइफल्स।

74. (15307909) सप्पर एम० गोपाल, इंजीनियर्स।

75. (13684229) गार्ड्समैन रानवीर सिंह भदोरिया, गार्ड्स (मरणोपरांत)।

76. (4173405) आर० पी० एफ० एल० मोहन सिंह, कुमाऊं (मरणोपरांत)।

सुधीर नाथ,
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 1996

सं० 91-प्रेज/96—राष्ट्रपति निम्नलिखित अधिकारी को उनके साहसिक कार्यों के लिए "नौसेना मेडल/नेवल मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट कमांडर दीपक डेनियल पन्त (02485-वाई)।

सुधीर नाथ,
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 1996

सं० 92-प्रेज/96—राष्ट्रपति निम्नलिखित अधिकारियों/कार्मिकों को उनके साहसिक कार्यों के लिए "वायुसेना मेडल/एयर फोर्स मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. विंग कमांडर भूपिन्दर सिंह सभ्लोक (13795) उड़ान (पायलट)
2. विंग कमांडर रविकृष्ण (13807) उड़ान (पायलट)
3. स्क्वाड्रन लीडर आनन्द गोडे (16231) उड़ान (पायलट)
4. स्क्वाड्रन लीडर फिलिप्स जैकब (15725) उड़ान (पायलट)
5. फ्लाइंग अफसर सुब्रोतो चाकी (22521) उड़ान (पायलट)

सुधीर नाथ,
राष्ट्रपति का संयुक्त सचिव

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली–110001, दिनांक 12 नवम्बर 1996

सं० 4/1/3/सी० ओ० डी०/96—प्रो० राम कापसे, संसद सदस्य को 5 नवम्बर, 1996 से वर्ष 1996–97 के लिए विभागों से सम्बद्ध रक्षा सम्बन्धी स्थायी समिति का सदस्य नाम निर्दिष्ट किया गया है ।

बी०एन० गौड़,
निदेशक

योजना आयोग

सामाजिक आर्थिक अनुसंधान एकक

नई दिल्ली, दिनांक 18 अक्तूबर 1996

संकल्प

योजना आयोग के दिनांक 14 अगस्त, 1995 के संकल्प संख्या ओ–15011/2/96–एसईआर के संदर्भ में—

1. योजना आयोग तत्काल प्रभाव से योजना से सम्बन्धित क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य पर सलाह देने के लिए अपनी अनुसंधान सलाहकार समिति का पुनर्गठन करने का निर्णय किया है।

गठन

1. प्रो० वाई० के० अलघ — अध्यक्ष
   7, अशोक रोड,
   नई दिल्ली–110001
2. प्रो० सुशीला भान, — सदस्य
   निदेशक, शांति अनुसंधान और कार्य संस्थान,
   81, गगन विहार, दिल्ली–110057
3. प्रो० एस० एस० वार्डे, — सदस्य
   कपिलवस्तु, स्वामी विवेकानन्द मार्ग,
   बांद्रा, (पश्चिम) मुम्बई–400050
4. डा० आर० राधाकृष्ण, — सदस्य
   सदस्य–सचिव, आईसीएसएसआर,
   अरुणाआसफ अली मार्ग, नई दिल्ली–110067
5. डा० ए० शर्मा, — सदस्य
   दिल्ली केन्द्र प्रमुख,आईएमआई,
   7, एसजेएस समांस्वत मार्ग,
   नई दिल्ली–110001
6. डा० राकेश मोहन, — सदस्य
   महानिदेशक, एनसीईआर,
   11, परणीला भवन,
   11, आई० पी० एस्टेट,
   नई दिल्ली–110002
7. डा० विमल जलान, — सदस्य
   सदस्य–सचिव (पीसी),
8. प्रो० एस० आर० हाशिम, — सदस्य
   सदस्य (पीसी),
9. डा० जे० एस० बजाज, — सदस्य
   सदस्य (पीसी)
10. श्री एन० पार्थसारथी, — सदस्य
    जे० एस० एफए, (पीसी),
11. डा० एस० पी० पाल, — सदस्य–सचिव
    सलाहकार (पीसी)

2 योजना आयोग में तैयार किए जाने वाले अनुसंधान प्रस्तावों के सम्बन्ध में, अनुसन्धान सलाहकार समिति की एक उप–समिति को उपयुक्त निर्णय लेने का अधिकार दिया जाएगा । उप–समिति का गठन निम्नानुसार किया जाएगा —

उपसमिति का गठन

1. प्रो० वाई० के० अलघ — अध्यक्ष
2. डा० बिमल जालान, सदस्य सचिव (पीसी) —सदस्य
3. प्रो० एस० आर० हाशिम, सदस्य (पीसी) —सदस्य
4. डा० जे० एस० बजाज, — सदस्य
   सदस्य (पी०सी०)
5. श्री एन० पार्थसारथी, — सदस्य
   जे० एस०, एफ० ए० (पी०सी०)
6. डा० एस० पी० पाल,
   सलाहकार (पी०सी०) — सदस्य-सचिव

विचारार्थ विषय

(1) योजना के लिए आवश्यक अनुसंधान के क्षेत्रों का पता लगाना, इन क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य करने के लिए विद्वानों और संस्थाओं का पता लगाना, उपयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं को प्रतिपादित कराना तथा योजना आयोग द्वारा वित्त पोषित किए जाने हेतु अनुमोदन के लिए इनको प्रक्रम में लाना ।

(2) योजना से संबंधित क्षेत्रों में संस्थाओं/विद्वानों से प्राप्त अनुसंधान अध्ययन प्रस्तावों की जांच करना तथा योजना आयोग द्वारा वित्त पोषित किए जाने की उपयुक्तता पर सलाह देना ।

(3) जिन अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए विभिन्न अनुसंधान संस्थाओं को योजना आयोग द्वारा आवर्ती ब्लाक अनुदान के रूप में वित्त पोषित किया जाता है, अर्थात् गोखले राजनीतिक और आर्थिक संस्थान, पुणे और अर्थशास्त्र विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई आदि, को अनुसंधान कार्यक्रमों पर सलाह देना ।

(4) योजना आयोग से प्राप्त वित्तीय सहायता से विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में आयोजित प्रशिक्षण और अनुसंधान सह प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर सलाह देना ।

(5) योजना आयोग द्वारा प्रायोजित दूसरे अनुसंधान अध्ययनों के साथ प्रयुक्त जनशक्ति अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान कार्यक्रम के बीच सामंजस्य स्थापित करने के दृष्टिकोण से विचार करना ।

(6) योजना आयोग से प्राप्त वित्तीय सहायता से प्रकाशन के लिए पूर्ण अध्ययनों की उपयुक्तता पर सलाह देना ।

(7) पहचान की गयी विकास समस्याओं पर विचार करने के लिए आयोजित की जाने वाली गोष्ठियों को अंशतः या पूर्णतः वित्त पोषित करने की उपयुक्तता पर सलाह देना ।

(8) योजना आयोग की आंतरिक अनुसंधान क्षमता को विकसित करना तथा इस प्रयोजनार्थ अनुसंधान अध्ययनों को आंतरिक रूप से जारी रखना ।

(9) योजना आयोग के विभिन्न प्रभागों द्वारा आरम्भ प्रायोजित अनुसंधान और परामर्श गतिविधियों के साथ-साथ दूसरे केन्द्रीय मंत्रालयों और अन्य एजेंसियों द्वारा आयोजना के अनुरूप आरम्भ प्रायोजित अनुसंधान तथा परामर्शी कार्यकलापों का समन्वयन करना ।

(10) मंत्रालयों और विभिन्न सरकारी एजेंसियों (एन० आई०सी० सहित) और आयोजना तथा नीतिगत प्रयोजनों के लिए उनके डाटा आधार के उपयोग की सूचना तथा डाटा प्रणाली का समन्वयन करना ।

(11) राज्य और अपेक्षित निम्न स्तरों पर आयोजना प्रक्रिया के लिए पद्धति के विकास का समर्थन करना तथा विकेन्द्रीकृत आयोजना की पद्धति में प्रशिक्षण को बढ़ावा देना, तथा

(12) उपरोक्त कार्यों के निष्पादन से संबंधित अथवा प्रासंगिक यदि कोई अन्य मामले हों तो उस पर सलाह देना ।

3. सरकार द्वारा अन्यथा अधिसूचित नहीं किये जाने तक, इस समिति के कार्यकाल की अवधि तीन वर्ष के लिए होगी ।

4. इस समिति की बैठक इसके अध्यक्ष के निर्णय के अनुसार बुलाई जाएगी, यथावश्यक, इसकी बैठक नई दिल्ली में ही होगी ।

5. योजना आयोग का सामाजिक आर्थिक अनुसंधान एकक इस समिति के सचिवालय के रूप में कार्य करेगा ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की प्रतियां सभी संबंधितों को भेजी जाएं तथा जनसाधारण की जानकारी के लिए इसे भारत के राजपत्र में भी प्रकाशित किया जाए ।

ए० एस० लाम्बा
निदेशक (प्रशासन)

उद्योग मंत्रालय

औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग

नई दिल्ली, अक्तूबर 1996

संकल्प

सं० 07011/2/95—नमक—इस मंत्रालय के दिनांक 8 फरवरी, 1996 के संकल्प सं० 07011/2/95—नमक, जिसमें नमक हेतु केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड का पुनर्गठन किया गया था, के अनुक्रम में भारत सरकार ने क्रम सं० 28 से 30 की प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित सांसदों को जन कार्यों का ज्ञान और अनुभव रखने वाले व्यक्तियों की श्रेणी के तहत बोर्ड के सदस्यों के रूप में मनोनीत करने का निर्णय लिया है :

1. श्री पी० सी० चाको, सांसद (लोक सभा) ।
2. श्री पी० वी०राजेन्द्रन, सांसद (लोक सभा) ।
3. श्री निलोतपाल बसु, सांसद (राज्य सभा) ।
4. श्री पी० सौंदरराजन, सांसद (राज्य सभा) ।

आदेश

अतः आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सभी राज्य सरकारों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, योजना आयोग, मंत्रिमंडल सचिवालय और प्रधानमंत्री के कार्यालय को प्रेषित किया जाए ।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र, भाग—1, खंड—1 में प्रकाशित किया जाए ।

श्रीमती प्रतिभा करन
संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 1996

No. 87-Pres/96.—The President is pleased to approved the award of 'Kirti Chakra' for acts of conspicuous gallantry to :—

Poojari Manikyam, (*Posthumous*)
Andhra Pradesh.

(Effective date of the award : 20th April, 1995).

Poojari Manikyam, Sarpanch of Thimmapet Village, Warangal District was bold and courageous enough to speak out openly against violence of the extremist groups and, therefore, was their target.

The Janashakti faction of extremists asked Poojari Manikyam and his cousin Poojari Adinarayana to collect Rs. 6 lakhs for party fund from the villagers of Thimmampet. On 20 April 1995 about 7.30 PM, when Poojari Manikyam expressed his inability to fulfil their demand, the Dalam leader Dharmanna instructed his followers to tie the hands of both Poojari brothers to the back. Dalam members first tied the rands of Poojari Adinarayana who got alert, tried to escape and started running. He was chased by the extremists and was axed to death.

Apprehending danger to his life, Poojari Manikyam decided to fight unto death. When the extrmists headed towards him, he gave a strong blow on the chest of one of the extremists with his hand who vomitted blood and died. He then attacked another extremist and gave him strong blows with his first. The extremist fell on the ground and died later. At this juncture, torch light was focussed on his eyes and all the remaining Dalam members pounced upon him and axed him to death. Before his death Manikyam caught hold of Dharmanna, the Dalam leader and caused injuries to him.

Poojari Manikyam, thus, showed exemplary courage and conspicuous gallantry even in the face of his impending death and with his daring act became a source of inspiration to the youth.

SUDHIR NATH
Jt. Secy.

No. 88-Pres/96.—The President is pleased to approve the award of 'Vir Chakra' for the undermentioned persons for acts of gallantry in the face of enemy :—

1. Captain Sahill Sharma (IC-51806), (*Posthmous*)
Artillery.

(Effective date of the award : 22nd February, 1995).

Captain Sahill Sharma, Artillery, 237 Field Regiment attached with 118 Field Regiment volunteered to man the Amar Observation Post in Bilafondla Glacier in 'OP Meghdoot' and in his tenure destroyed an enemy's observation post, six bunkers, one fibre glass hut, large quantity of ammunition and neutralised 105 mm Guns.

On 22 February 1995 at 1300 hours he commenced shooting with the guns after being ordered to engage enemy's Three Pimple Post. At 1500 hours enemy retaliated with accurate and heavy volume of air burst artillery fire. He had barely directed 19 rounds when he was struck with the air burst splinter on his head. Inspite of bleeding profusely he continued to direct the fire till the enemy post was destroyed completely. The officer, braving temperature of minus 30 degrees celsius, wind velocity of 90 kilometer per hour and intense enemy shelling kept on directing artillery fire on the post till the last. The Officer died of his wounds at Base Camp later.

Captain Sahill Sharma, thus, exihibited physical courage, professional brilliance, dedication and maturity and made supreme sacrifice in accomplishing the assigned operational task in the face of enemy.

2. 4055684 Havildar Surendar Singh, (*Posthumous*)
Garhwal Rifles.

(Effective date of the award : 15th June, 1995).

On 15th June 1995, Havildar Surendar Singh, 4 Garhwal Rifles was mortar detachment commander at the Tiger Saddle, the most distant and difficult post in the Siachen Glacier. The enemy engaged Tiger saddle with heavy artillery fire. Havildar Surendar Singh unmindful of the enemy fire, deployed his mortars and engaged the enemy observation post.

Despite enemy shelling becoming more accurate, Havildar Surendar Singh kept encouraging his men and maintained the fighting spirit. When one of the mortar members collapsed due to exposure and cold, Havildar Surendar Singh took up position, started personally firing the mortar and also performing duties of the mortar position commander. Amidst temperature below —40 degrees celsius, wind speed above 80 kmph and enemy fire, Havildar Surendar Singh maintained accurate retaliatory fire on the enemy.

Havildar Surendar Singh was at the mortar position, when a splinter from the enemy artillery hit on his back. Unmindful of the injury, he continued to bring down accurate fire on the enemy observation post and neutralised it. Havildar Surendar Singh true to the highest traditions and displaying valour of the highest order refused to vacate the mortar position despite sustaining grave injury. He finally succumbed to his injuries at the gun position.

Havildar Surendar Singh, thus, displayed unflinching devotion to duty, exemplary courage and made the supreme sacrific in the face of the enemy.

SUDHIR NATH
Jt. Secy.

No. 89-Pres/96.—The President is pleased to approve the award of Shaurya Chakra to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. Major Babu Ram Kushwaha (IC-42655), SM,
Assam Regiment.

(Effective date of the award : 11th June, 1995).

Major Babu Ram Kushwaha, Assam Regiment has been performing the duties of Charlie Company Commander, 2nd Battalion Rashtriya Rifles. On 11 June 1995 based on a specific information obtained, he conducted a raid on a militant's hideout at 2100 hours at village Ekingam in Anantnag District of Jammu and Kashmir.

After sealing off all the escape routes with his three platoons he stormed the hideout with his company Headquarters group and apprehended a Company Commander of Hizbul Mujahideen from the top floor of a three storey building.

As the troopes were adjusting the cordon to pullout, the Company Commander's party was fired upon from outside the village to assist the apprehendec to escape. Major Babu Ram Kushwaha immediately chased the firing militants. Despite being pitch dark, undulating ground and a number of nullahs against him, he single handedly killed two militants and recovered one AK 47 rifle, one magazine with 20 rounds and one grenade thereby saving the lives of troops under his command. Sustained interrogation of the Hizbul Mujahideen Company Commander through out the night resulted in recovery of a Universal Machine Gun from a hide out on 12 June 1995.

Major Babu Ram Kushwaha, SM, thus displayed outstanding leadership qualities and exceptional courage in the face of militants.

2. Major Mahesh Chander (IC-44725),
Engineers.

(Effective date of the award : 14th June, 1995).

On 14 June 95, Major Mahesh Chander, 107 Engineer Regiment, Army Development Group, along with his troops was detailed to carryout reconnaissance in village Darku in District Chandel in Manipur, for development and rehabilitation work under 'OP Good Samaritan.

At 1600 hours when the party was close to Darku Village near Chakpikarong it was suddenly ambushed by insurgents. Immediately Major Mahesh Chander along with his troops returned fire to counter the ambush. During this encounter, Major Mahesh Chander received LMG burst in his ankle and spine. Though injured grieviously, Major Mahesh Chander with his doggedc termination continued to lead his troops in order to counter the ambush. During this incident, the Officer showed exemplary quality of leadership and courage even at the risk to his own life. His offensive action and personal example helped in saving the lives of his men and loss of weapons. Though the life of the officer could be saved but he has been incapacitated due to becoming paraplegic.

Major Mahesh Chander, thus, displayed exceptional courage and dedication to duty of the highest order in the face of insurgent fire.

3. Captain Ramvinder Singh Gill (IC-48069), Special Forces Regiment.

(Effective date of the award : 24th June, 1995).

Bravo Team 9th Battalion the Special Forces Regiment, set out on 24 June 95, to capture the militants infiltrating from Pakistan occupied Kashmir, using these hideouts located in the Jakar Nake Jungles in Jammu and Kashmir. Captain Ramvinder Singh Gill moved with his team along the rugged high altitude Shamshabari mountain at night in heavy rains and after sustained surveillance located the militants' presence in a thickly wooded nala.

Captain Ramvinder Singh Gill volunteered to elim'nate the hides and the militan's moved ahead to search the nala. Detecting a sentry at the hideout, Captain Ramvinder Singh Gill moved forward and shot him. On hearing the sound of firing the militants got altered and brought intense fire on the troops. Captain Ramvinder Singh Gill ordered his men to return the fire lobbed a grenade and charged ahead oblivious of his personal safety. He killed a militant manning a trench with a burst of rifle fire on his head. Thereafter undaunted by the hail of bullets Captain Ramvinder Singh Gill grappled with the last living militant strangling him with his bare hands.

Captain Ramvinder Singh Gill, thus, showed gallantry, indomitable courage, leadership of outstanding merit and deep concern for his comrades.

4. 2470981 Havildar Lakhvinder Singh, *(Posthumous)* Punjab Regiment.

(Effective date of the award : 20th July, 1995).

On 20 July 1995 while approaching the village Buna Wadur, Tehsil Sopore in District Baramulla of Jammu and Kashmir during a search operation, terrorists fired on troops and ran into the Agriculture College Staff Quarters. Havildar Lakhvindar Singh, 26 Punjab was a part of search party which spotted terrorists on the first floor of a house.

Sensing danger to search party, Havildar Lakhvindar Singh with total disregard to personal safety and exemplary comradeship, pushed aside one of his comrades and also covered the remaining search party. He thus saved lives of his fellow comrades. However, in the process he sustained gun shot wounded on the right shoulder.

Realising that terrorists may escape dispite being grievously wounded Havildar Lakhvindar Singh displaying unparalled bravely stormed the hourse and shot dead two fully armed dreaded terrorists including one self styled Company Commander of Hizbul Mujahideen In the exchange of fire he sustained gun shot wound on head and succumbed to his injuries on the same day.

Havildar Lakhvinder Singh, thus displayed bravery devotion to duty and spirit of self sacrifice.

5. 2681488 Grenadier Surender Singh Maan, *(Posthumous)*

Grenadiers.

(Effective date of the award : 22nd July, 1995).

Delta and Charlie Companies of 2 Grenadiers were given the task of sanitising village Sovibug, District Budgam of Jammu and Kashmir on 22 July 1995. At about 1150 hours information was received about a group of foreign mercenaries occupying a house in the village.

Grenadier Surender Singh Maan, 2 Grenadiers volunteered to be the first entry man into the house. When he entered the house no terrorists were found on the ground floor. He moved up to storm the first floor which was connected only by a narrow staircase. Grenadier Surender Singh Maan rushed to the stairs and on the first flight the militants fired on him. The young soldier did not stop but continued up, returning the fire. He killed one mercenary instantly and despite suffering multiple bullet wounds, closed in with the second mercenary and killed him also before succumbing to his own injuries on the spot.

Grenadier Surender Singh Maan, thus, displayed conspicuous gallantry in the face of militant's fire and made supreme sacrifice.

6. 2683379 Grenadier Ranjit, *(Posthumous)*

Grenadiers.

(Effective date of the award : 22nd July, 1995).

Grenadier Ranjit, 2 Grenadiers formed part of Delta Company quick reaction team which had cordoned a house occupied by a group of foreign mercenaries in village Soyibug, Jammu and Kashmir on 22 July 1995.

On cordoning the house, warning to surrender was given to the militants. When no response was received it was decided to storm the house. At about 1215 hours, Grenadier Ranjit alongwith another other rank volunteered to storm the house. On entering the house no terrorists were found on the ground flooor and storming of the first floor through the narrow staircase was undertaken. His comrade who was in front came under heavy fire from two mercenaries from first floor. He reached the top of the stairs and after killing both the mercenaries collapsed due to his injuries.

Grenadier Ranjit without any hesitation ran up to extricate his comrade, in the process exposing himself to the fire of two other mercenaries who had positioned themselves behind the cupboard. Undeterred by the heavy volume of fire Grenadier Ranjit closed in with them and while shooting down the first mercenary sustained bullet wounds in the neck, thigh and arm. Despite grievous injuries Grenadier Ranjit killed the second mercenary and then turned his attention back to his comrade whom he carried back down the stairs. Grenadier Ranjit later succumed to his injuries outside the house.

Grenadier Ranjit, thus, displayed examplary act of courage and selfless devotion to duty in saving the life of his comrade at the cost of his own life.

7. Second Lieutenant Lalit Sharma (SS-36231), Grenadiers.

(Effective date of the award : 10th August, 1995).

Second Lieutenant Lalit Sharma, 3 Grenadiers Post was Commander at Domari Gali, in Bodnambal Jungle in Kunwara District of Jammu and Kashmir, at a height of 11390 feet above sea level.

On 10 August 95 2/Lt Lalit Sharma received information of infiltration through an adiacent post. He followed the trail and established contact with militants at 1000 hours in the dense jungle. Coming under heavy fire which injured him and the scount 2/Lt Lalit Sharma retaliated with ferocity. Bleeding profusely from the knee and dragging himself from one tree to another, he deployed his Light Machine Gun Group to pin down the militants. 2/Lt Lalit Sharma with the radio operator crawling to the left bank surprised militants by intense fire killing two militants. The "Battle of the bush" continued for hours in which 2/Lt Lalit Sharma despite being injured refused evacuation and continued to fight till successful culmination of operation at 1430 hours.

Second Lieutenant Lalit Sharma with his undaunted courage, utter disregard to personal safety despite being seriously injured, controlled the situation with coolness by motivating his men. This operation resulted in killing of five Afghan mercenaries and recovery of eight weapons and ammunitions.

Second Lieutenant Lalit Sharma, thus, displayed conspicuous gallantry, indomitable spirit and extreme devotion to duty in his fight against the militants.

8. 2673821 Lance Naik Parsa Ram Jat (*Posthumous*)
Grenadiers.

(Effective date of the award : 10th August, 1995).

On 10 August 1995 Lance Naik Parsa Ram Jat, 3 Grenadiers was the scout of the search party which moved to trace and destroy sheltering militants in Bodrambal Jungle, District Kupwara in Jammu and Kashmir.

While negotiating through the dense jungle, Lance Naik Parsa Ram Jat noticed some movement. As he altered the party, the militants opened up with heavy automatic fire. Lance Naik Parsa Ram Jat spotted one militant behind a boulder. He crawled approximately 10 metres and killed the militant who was effectively interfering in any manoeuvre of the party. Suddenly a militant emerged from the left spraying bullets, injuring Parsa Ram who received two bullets in the chest and one in his groin. Badly wounded, the valiant soldier charged towards the militant, spraying bullets thereby killing him on the spot before succumbing to his injuries. On culmination of the operation, the body of the brave hero was found barely two metres from the dead militants.

Lance Naik Parsa Ram Jat, thus, displayed heroic act of valour, indomitable will and utter disregard to his personal safety in his fight against the militants.

9. 8024997W Company Havildar Major Raghurai Singh, (*Posthumous*)
BRDB.

(Effective date of the award : 11th August, 1995).

Company Havildar Major Raghurai Singh of 1816 Pioneer Company (Army) was incharge of Protection party consisting of five Army Pioneers deployed under Project Setuk in South Tripura in an highly infested area.

On 11 Aug 95, the protection party was ambushed at Jalaya when their vehicle was negotiating a steep climb between the two hillocks. Bursts of automatic fire were sprayed on the protection party from both sides from the hill tops. Company Havildar Major Raghuraj Singh immediately shouted the battle cry and exhorted the protection party to jump out, take position and engage the extremists. In the process, he was hit by a bullet that pierced through the left side of his stomach tearing open the intestine. Unmindful of his injury he crawled took up position and engaged the militants till his last breath.

Company Havildar Major Raghuraj Singh, thus, demonstrated gallantry, dauntless courage, presence of mind, leadership, dogged determination and made the supreme sacrifice in saving the valuable lives of two of his comrades.

10. 3385814 Lance Naik Satnam Singh, (*Posthumous*)
Sikh Regiment.

(Effective date of the award : 16th August, 1995).

On 16th August, 1995 Lance Naik Satnam Singh Sikh Regiment posted to 16 Rashtriya Rifles was the leading scout of the party picketing the road Mokokchung-Zunheboto in village Shizimi in Mokokchung District of Nagaland.

Being very alert, he spotted 15—20 undergrounds who had laid a deliberate ambush on an escarpment at 10—15 metres from the road. On being challenged by Lance Naik Satnam Singh, the undergrounds opened heavy volume of automatic fire. Lance Naik Satnam Singh sustained severe injuries in the lower abdomen and thighs.

Inspite of being critically injured Lance Naik Satnam Singh maintained his cool and displayed immense courage and bravely in face of the grave situation. With utter disregard to his personal safety, Lance Naik Satnam Singh continued firing at the undergrounds and killed the Commander of the underground's ambush party, before succumbing to his injuries at 0720 hours on 16 August, 1995. Lance Naik Satnam Singh's valiant and sterling action forced the undergrounds to abandon the ambush site and also saved the lives of his colleagues.

Lance Naik Satnam Singh, thus, displayed conspicuous gallantry, indomitable spirit and extreme devotion to duty at the cost of his own life.

11. Major Kaluvakolan Bhushan (IC-45685), SM
Special Forces Regiment

(Effective date of the award : 26th August, 1995)

Major Kaluvakolan Bhushan, Sena Medal of 9 Special Forces Regiment was leading Alfa Team in Lolab Valley in Kupwara District of Jammu and Kashmir. He planned a raid on a hideout of the Lashkar-e-Toiyba, a dreaded foreign mercenary outfit, located at an altitude of approximately 9500 feet in dense forest.

On 26 August 95, at 0230 hours the team reached the commando base and Major Kaluvakolan Bhushan, SM with a squad of five men approached the hideout which was a large, well concealed natural cave. When one of the squad member slipped, the sentry of the hideout raised an alarm. Major Kaluvakolan Bhushan, SM at a grave risk to his life charged forward lobbing a grenade to cover his move and signalled his JCO who killed the sentry in a burst of AK 47 fire. This brought a hail of bullets from the surviving militants.

Major Kaluvakolan Bhushan, with utter disregard to his personal safety moved forward but was caught in a stronghold by a militant using cover of darkness. Major Kaluvakolan Bhushan using sheer brute force, bodily lifted the militant and threw him down the precipice, killing him on the spot. Thereafter he lobbed a grenade, killing two militants in one go. Finally this gallant officer entered the cave in a hail of bullets lobbing grenades and firing from the hip. At his feet lay two other dead militants. By his act, this dynamic and aggressive leader killed five militants, recovered eight weapons and a large quantity of sophisticated explosive devices.

Major Kaluvakolan Bhushan thus showed indomitable courage, conspicuous gallantry in fighting with the militants

12. 15102128 Gunner Prem Kumar Singh, (*Posthumous*)
Artillery

(Effective date of the award : 24th September, 1995)

On 24 September 1995, at 1635 hours while the cordon was being established around the dispensary in village Chaklu, District Baramulla in Jammu and Kashmir, the terrorists threw grenades and opened up heavy automatic fire.

Gunner Prem Kumar Singh, 29 Rashtriya Rifles in spite of being severly wounded and almost paralysed below abdomen, crawled into a firing position behind a cover and retaliated with accurate and heavy automatic fire from his Light Machine Gun. Disregarding the fact that he was slowly losing consciousness, he with his sheer determination and exceptional courage kept on engaging the terrorists.

As a result of his accurate and sustained reflex firing the terrorists got pinned down and an effective close cordon of the dispensary was established which resulted in the killing of ten terrorists and recovery of 09 AK rifles in one single operation.

Gunner Prem Kumar Singh, thus, displayed act of unmatched valour and bravery and supreme self sacrifice in the highest traditions of the Indian Army.

13. Major Ganesh Madappa (IC-45207), (*Posthumous*)
Armoured Corps

(Effective date of the award : 27th September, 1995)

On 27 September 1995 Major Ganesh Madappa, Armoured Corps, 36 Rashtriya Rifles was tasked to carry out spot raid on a militant hideout at Village Bachhru in Badgam District of Jammu and Kashmir.

At 2030 hours while approaching the hideout, three militants opened indiscriminate fire from a house on the company column injuring the leading scout. Major Ganesh Madappa, displaying superb leadership and presence of mind, immediately ordered surrounding of the house and he himself rushed forward to block the exit. On seeing this quick reaction, the militants firing desperately rushed out through the exit to escape. Major Ganesh Madappa boldly engaged the militants at close range and received multiple gun shot wounds in the exchange of fire. In spite of being critically wounded, he charged the fleeing militants firing from the hip and killed one of them.

Though bleeding profusely, with total disregard to his personal safety, he continued chasing the militants till he collapsed. He later succumbed to his injuries at 2245 hours on 27 September 1995. The bullet-ridden dead body of one militant recovered from the scene of operation was identified as that of a Pakistani trained militant of Tariq-ul-Mujahideen.

Major Ganesh Madappa, thus, displayed conspicuous gallantry, indomitable spirit and extreme devotion to duty at the cost of his own life.

14. 13691220 Guardsman Gopa Kumar R. (*Posthumous*)
Guards

(Effective date of the award : 15th October, 1995)

On 15 October 1995 Guardsman Gopa Kumar R, Guards, 12 Rashtriya Rifles was scout of an impromptu patrol at village Sote, Tehsil Gundoh, District Doda in Jammu and Kashmir.

Guardsman Gopa Kumar noticed some suspicious movement in one of the houses and alerted the patrol which cordoned it. When Guardsman Gopa Kumar along with two other were approaching the house, militants started firing indiscriminately. With total disregard to his personal safety Guardsman Gopa Kumar charged towards the ground floor and shot one militant with excellent marksmanship. The militant while falling down, took out a hand grenade for throwing at the patrol party, Guardsman Gopa Kumar snatched the grenade swiftly from the militant's hand and threw it to a safer place thus saving lives of his comrades.

At this juncture a bullet hit his left eye and got embedded in the skull. Though bleeding profusely he continued to offer stiff resistance, refused evacuation and prevented escape of other trapped militants by his precision in shooting and stark courage. His selfless supreme sacrifice on 15 October 1995 resulted in killing of three Hiybul militants and recovery of large quantity of arms and ammunitions.

Guardsman Gopa Kumar R, thus, displayed indomitable courage, single minded dedication beyond the call of duty and made supreme self sacrifice in his fight with militants.

15. Lieutenant Colonel Samir Kumar Chakravorty
(IC-34600), SM
Garhwal Rifles

(Effective date of the award : 17th October, 1995)

On 17 October 1995 Lieutenant Colonel Samir Kumar Chakravorty, Sena Medal, 36 Rashtriya Rifles was leading a cordon and search operation at Wagam Village in Badgam District of Jammu and Kashmir. At 0800 hours the search party drew heavy automatic fire from a house.

Lieutenant Colonel Samir Kumar Chakravorty, fearlessly moving under fire immediately readjusted the cordon to cover three sides of the house and approached the house alongwith two ranks from the rear. On observing the militants' fire from three windows of a large room he directed the men to cover his movements from outside and with dogged determination, entered the rear room through a half opened door.

Having achieved total surprise with his extremely professional manoeuvre, he lobbed a hand grenade into the other room and with other disregard to his personal safety, charged into it firing from his automatic rifle. In the ensuing fierce encounter, Lt Col Samir Kumar Chakravorty, shot dead 4 hard core militants including the District Administrator of the Tehreek-ul-Mujahideen and recovered 3 AK 47 rifles, 7 AK magazines, 81 rounds of AK ammunition and 8 hand grenades.

Lieutenant Colonel Samir Kumar Chakravorty, thus, displayed superb leadership qualities, initiative, devotion to duty and exceptional courage.

16. 4355549 Naik Someswar Saikia, (*Posthumous*)
Assam Regiment

(Effective date of the award : 17th October, 1995)

On 17 October 95, a Company of 35 Rashtriya Rifles was tasked to seek encounter in village Gulapura in Badgam District of Jammu and Kashmir. Naik Someswar Saikia, Assam Regiment along with another Other Rank was manning a Light Machine Gun as a part of close cordon.

At about 1045 hours this Light Machine Gun came under effective fire from ANEs from a nearby house. Despite this and continuous lobbing of grenades Naik Someswar Saikia continued to bring down effective fire on Anti National Elements (ANEs). Exhibiting exemplary courage with utter disregard to personal safety, Naik Someswar Saikia crawled upto the house occupied by the ANEs, closed in and lobbed a grenade which killed one ANE who was firing from an M-80 MMG at our troops. In this act of unparalleled courage Naik Someswar Saikia was hit in his abdomen by a burst of ANE fire from another house. Despite being critically wounded Naik Someswar Saikia displaying extraordinary bravery single handedly charged at the second ANE and killed him.

Naik Someswar Saikia in this action made the supreme sacrifice and died of the wounds at 2015 hours on 17 October 95. The operation ultimately led to elimination of six militants including four foreign mercenaries.

Naik Someswar Saikia, thus, exhibited conspicuous bravery, dogged determination and total disregard to his personal safety in the face of intense militants' fire.

17. 1580381 Sapper Balbir Singh, (*Posthumous*)
Engineers

(Effective date of the award : 17th October, 1995)

13 Rashtriya Rifles carried out a seek encounter operation at village Karhama, Tehsil Ganderbal, District Srinagar in Jammu and Kashmir on 17 and 18 October 1995. The terrorists fired at own troops at about 1330 hours on 17 October 1995 and a fierce fire fight ensued for about six hours.

Sapper Balbir Singh 13 Rashtriya Rifles was one of the scouts when the contact was established. With exceptional skill at arms, the jawan shot dead one of the terrorists before the latter could take cover. Subsequently, he alongwith his body, dashed behind the terrorists to ensure that there was no break in contact and cornered the terrorists into two houses.

The terrorists holed up inside opened indiscriminate fire on the jawans. Sapper Balbir Singh realising the gravity of the situation and understanding the fact that last light wast fast descending, broke open a window changed into the room, engaged the terrorist in hand to hand fight and killed him. In the process, he received a Gun Shot Wound on neck and succumbed on way to hospital on 17 October 1995 after killing two terrorists and recovering two AK Rifles.

Sapper Balbir Singh, thus, displayed exemplary devotion to duty, raw courage and exceptional skill at arms before making the supreme sacrifice.

18. Major Balraj Sharma (IC-49611), Armoured Corps

(Effective date of the award : 18th November, 1995)

On 18 November 1995, at 0925 hours about 20 insurgents ambushed a column of 8 Manipur Rifles in Mongbung and

killed three civilians and injured two more travelling in a bus.

On hearing the sound of firing, Major Balraj Sharma of 90 Armoured Regiment while on attachment with 10 Jammu and Kashmir Light Infantry located at Sugnu Post, immediately rushed to the site with a Quick Reaction Team. The Officer led his team on a hot pursuit of the fleeing insurgents, lasting 3 1/2 hours through difficult mountain terrain, wading through chest-deep waters of Chakpi and Manipur rivers and succeeded in establishing contact at about 1300 hours near village Mongbung.

Fierce encounter ensued with the insurgents bringing down heavy volume of fire of automatic weapons, despite which, with utter disregard to his personal safety the officer fearlessly crawled to within 15 metres of their position. He then physically charged and killed the insurgent attempting to throw a grenade at his Assault Group. Thereafter, he killed two more insurgents and captured their Light Machine Gun. This gallant act of the officer further contributed to overall success of the operation resulting in killing of seven insurgents, apprehension of one and capture of large quantities of Arms and Ammunition including a Light Machine Gun & Selt Loading Rifle.

Major Balraj Sharma, thus, displayed conspicuous gallantry, indomitable spirit and devotion to duty.

19. Captain Ramesh Singh (IC-48334), Army Service Corps (Posthumous)

(Effective date of the award: 3rd January, 1996)

On 03 January 1996, 13 Rashtriya Rifles was seeking encounter with the terrorists in village Tulamula and Rampur in Srinagar District of Jammu and Kashmir. The terrorists fired on troops at 1015 hours inflicting one casualty.

Captain Ramesh Singh, Army Service Corps, at 1430 hours observed some terrorists firing with snipers and Pikas from a three storey house. Realising the gravity of the situation Captain Ramesh Singh moved into the house and charged at the group of terrorists killing one of them on the spot. In this action, Captain Ramesh Singh was wounded in the leg. But the valiant officer continued to engage the other terrorists in the house alongwith his group.

A terrorist then charged at Captain Ramesh Singh who despite being seriously wounded and in a critical condition, killed the terrorists on the spot. In doing so, he was mortally wounded and he made the supreme sacrifice of his life. The slain terrorists were identified as Gazal Bhani, Deputy Chief of Al Badar, a suicide squad of Hizbul Mujahideen and Fiaz, a Pakistan trained terrorist. A Sniper rifle, an AK 56 and a Pistol were recovered from them.

Captain Ramesh Singh, thus, exhibited unparalled act of gallantry, devotion to duty, tactical acumen and made supreme sacrifice in his fight against the terrorists.

20. Major Rajeev Kumar Laul (IC-46690), Guards (Posthumous)

(Effective date of the award: 4th January, 1996)

On 04 January 1996, the raising day of the 13 Guards at 1230 hours, on specific information about the presence of foreign militants in village Zainakut, District Srinagar, Jammu and Kashmir Major Rajeev Kumar Laul, 13 Guards quickly organised his company for search.

The officer while combing the village came under effective fire from a group of terrorists hiding behind a cover. The officer maneuovered closer and engaged them personally in a fierce gun battle. The officer and troops were sniped at by another group of terrorist from the attic of a house. The officer was critically wounded.

Though critically wounded, the officer with undaunted courage engaged the fleeing terrorists, with steady nerves, taking control of his failing senses and shot both the terrorists dead, before collapsing himself.

The exemplary standards of physical courage, tenacity and steely nerves shown by the officer in the face of extreme danger to him and his troops marks him out as a leader of exceptional quality in the true tradition of the Indian Army.

Major Rajeev Kumar Laul, thus, displayed exceptional courage, grit and determination, dedication to duty without regard to his personal safety and spirit of supreme sacrifice.

21. Second Lieutenant Gurdeep Salaria (IC-52793), Punjab Regiment (Posthumous)

(Effective date of the award: 10th January, 1996)

Second Liutenant Gurdeep Salaria of 23 Punjab was commanding the Ghatak Platoon of 81 Mountain Brigade established close cordon of a three stroyed building with a specific task of eliminating two known hard core terrorists.

Second Lieutenant Gurdeep Salaria ingenuously developed intelligence, in Village Panzgam in Pulwama District of Jammu and Kashmir at 2130 hours on 09 January 1996 This action resulted in a night long fire fight.

At 0630 hours on 10 January 1996 2/Lt Gurdeep Salaria sensing the extreme danger to his comrades who got exposed to militants fire due to day light, showing exemplary courage and taking grave risk crawled close to the house under heavy firing and lobbed three grenades through the window. This forced one of the militants to jump out of the window and 2/Lt Gurdeep Salaria fired and killed him instantly. 2/Lt Gurdeep Salaria located himself close of the window from where the other militant was effectively firing and toop up position to bring down fire on to the militant. At this point of time, 2/Lt Gurdeep Salaria got a brush of fire on his chest and lower armpit and was injured severely. Disregarding his injury, he continued firing and ultimately killed the militant. He succumbed to his injuries while being evacuated.

Second Lieutenant Gurgdeep Salaria, thus, displayed the sterling qualities of leadership, dogged determination and spirit of self sacrifice.

22. Major Anurag Srivastava (IC-45179), (*Posthumous*) Mechanised Infantry

(Effective date of the award : 11th January, 1996)

Major Anurag Srivastava, Mechanised Infantry, 2 Assam Rifles had earlier exhibited rare courage and exceptional leadership qualities by destroying National Socialist Council of Nagaland Regional Headquarters in Senapati District in Manipur.

Consequent to induction of the unit in Jammu and Kashmir in March 1995, the officer conceived, planned and executed with remarkable courage Company level operations claiming an Al Burq Divisional Commander, two Hizbul Mujahideen Battallion Commanders, and five dreaded Hizbul Mujahideen militants.

Confirmed intelligence of presence of 4–6 militants in Jagarpur, Kupwara District of Jammu and Kashmir led to launching of operations by 21 Assam Rifles on 11 January 1996.

Major Anurag Srivastava was tasked to cordon the village and conduct specific search. At approximately 0800 hours when the search team moved, they came under heavy volume of Anti National Element's Small Arms fire from adiacent heights injuring an Other Rank. Realising the gravity of the situation Major Anurag Srivastava tried to extricate injured comrade but could not do so due to pernicious volume of Universal Machine Gun fire. He immediately deployed his RI. and Light Machine Gun detachments on the flanks bringing down fire which had no effect on the well dug in and concealed militant.

Giving high priority to immediate evacuation of injured comrade Major Anurag Srivastava decided to eliminate the militant. At the spur of the moment, he moved single handed from cover to cover closing in on the militant With utter disregard to his personal safety and exceptional display of unparallelled courage, crawled the last bid and charged firing through the hail of bullet's killing the militant.

In the ensuing exchange of fire Major Anurag Srivastava sustained fatal bullet injury in the head thus making secrifice of his life to save injured comrade.

Major Anurag Srivastava, thus displayed act of unparallelled bravery, loyalty to his comrade-in-arms, leadership in the best traditions of the Indian Army.

23. 13618598 Paratrooper Mahiman Singh Nayal,
3 Para
(Posthumous)

(Effective date of the award : 27th January, 1996)

On 27 January 1996 a column of 3 Para was despatched to apprehend a very important underground in Dimapur Town of Nagaland. Paratrooper Mahiman of 3rd Battalion, The Parachute Regiment was part of this column. The undergrounds ambushed while the column was returning to the unit.

The ambush commenced with the lobbing of two grenades, One of which fell inside the vehicle while the second got stuck in its tarpauline. Paratrooper Mahiman realising the grave danger shouted to his comrades to jump out of the vehicle. Simultaneously he jerked the tarpauline to dislodge the grenade but unfortunately it rolled inside the vehicle. Fully knowing that the grenade would burst any time he swiftly picked the grenade and threw it. The grenade burst in his face and fatally injured him. His Valiant attempt did not go waste as it saved the lives of the others. It was just then that the insurgents opened heavy automatic fire and another group dashed to snatch weapons of his injured comrades. With all his residual strength Mahiman picked up his rifle and opened fire on the essailants and injured one. His stupendous grit and determination made the undergrounds flee and foiled their attempt to get away with the weapons. He succumbed to his injuries at 1815 hours on 27 January 1996.

Paratrooper Mahiman Singh Nayal, thus, displayed conspicuous gallantry, raw courage, supreme sacrifice and devotion to duty with utter disregard to his personal safety.

24. 13619642 Paratrooper Prakash Chandra,
Para
(Posthumous)

(Effective date of the award : 27th January, 1996)

On 27 January 1996, a column of 3rd Battalion, The Parachute Regiment apprehended an important underground in Dimapur (Nagaland). Paratrooper Prakash Chandra of Alfa Company, 3rd Battalion, The Parachute Regiment was part of this column. The column while returning to unit lines after apprehension was ambushed by undergrounds.

The underground ambush commenced with lobbing of two grenades into the military vehicle. Paratrooper Prakash Chandra picked up the grenade and threw it outside the vehicle. This saved a number of casualties that could have occurred in the vehicle.

After throwing the grenade outside, Paratrooper Prakash Chandra jumped out of the vehicle while firing his weapon and not caring for his personal safety he charged towards a underground Light Machine Gun bringing automatic fire towards the vehicle. In the process Prakash Chandra was however shot in the chest and died on the spot. As a result of his action the underground fled in panic under cover of darkness.

Paratrooper Prakash Chandra, thus, displayed exemplary courage, presence of mind, spirit of self sacrifice and dedication to serve beyond the call of duty.

25. 2789437 Sepoy Gadhave Jayadip Narayan,
Maratha Light Infantry
(Posthumous)

(Effective date of the award : 6th February, 1996)

Sepoy Gadhave Jayadip Narayan, 15 Maratha Light Infntry was part of Operation launched by Delta Company 15 Maratha Light Infantry on night of 05/06 February 1996. The operation aimed at destroying a National Socialist Council of Nagaland (I&M) NSCN (I&M) hideout in village Longiphek in Tuensang District of Nagaland, where high ranking NSCN (I&M) hardcore undergrounds were camping.

Delta Company Task Force of 30 selected ranks approached village Longiphek at 2300 hours on 05 February 1996. With exceptional stealth achieving total surprise, cordon and stops were deployed by 0031 hours on 06 February 1996. The raid party with Sepoy Gadhave in the lead followed by Major Mukerjee stalked as close as 50 yards from the hideout. A heavy volume of automatic fire was suddenly brought down by the undergrounds on the raid party. Undaunted and with utter disregard to personal safety and life, Sepoy Gadhave charged the hideout in face of effective and heavy fire. In the process he received a burst in his abdomen. Displaying conspicuous gallantry of the highest order, Sepoy Gadhave continued with his daring charge, killing the bodyguard of Operational Commander and thereafter continued to provide effective covering fire till destruction of the hideout and evacuation thereafter. Sepoy Gadhave ultimately gave the supreme sacrifice during evacuation to Military Hospital Dimapur on 06 February 1996 at 0825 hours.

Sepoy Gadhave Jayadip Narayan, thus ,displayed conspicuous bravery, devotion to duty and spirit of self sacrifice.

SUDHIR NATH,
Joint Secretary to the President

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 1996

No. 90-Pres/96.—President is pleased to approve the award of 'Sena Medal/Army Medal' to the undermentioned officers/personnel for acts of courage :—

1. Lieutenant Colonel Lakhpat Singh Yadav (IC-34972), Kumaon
2. Major Sanjay Kumar Thapa (IC-39454), Special Forces Regiment
3. Major Ranjit Singh Deswal (IC-41877), Guards
4. Major Ashok Mishra (IC-50421), Kumaon
5. Major Mohd Zahid Ullah Siddiqui (IC-45142), Armoured Corps
6. Major Haresh P Patel (IC-41108), Army Aviation
7. Major Paramjit Singh (IC-40353), Special Forces Regiment
8. Major Sanjeev Bhatty (IC-40640), Grenadiers
9. Major Khalid Ahmad Khan (IC-37641), Garhwal Rifles
10. Major Narendra Sheoran (IC-50663), Engineers
11. Major Hari Dutt (IC-46467), Artillery
(Posthumous)

12. Major Rohit Banerji (IC-49876), Rajputana Rifles

13. Major Abhishek Raj Bajpai (IC-44042) Mechanised Infantry

14. Major Sukhjit Singh (IC-38829), Jammu and Kashmir Rifles

15. Major Muthu Uday Kumar Raju (IC-39645), Para

16. Major Ramesh Digamber Poonekar (IC-35938), Para

17. Major Satinder Vir Singh (IC-37691) Jammu and Kashmir Rifles

18. Major Varghese David Abraham (IC-40800), Electrical and Mechanical Engineers

19. Captain Abhijit Chandra (IC-50591), Rajputana Rifles

20. Captain Shankar Gopinathan (IC-51551), Bihar Regiment

21. Acting Captain Sanjay R Thakur (TA-42193), Territorial Army

22. Captain Ramanjit Singh Kapany (IC-46400), Artillery

23. Captain Mahaveer Singh Kanwar (IC-49833), Engineers

24. Captain Ajay Tewari (IC-49441), Army Service Corps

25. Captain Rohit Kaushal (IC-49758), Punjab
(*Posthumous*)

26. Captain Chaitanya Limaye (IC-49885), Para

27. Second Lieutenant Mayank Upadhya (SS-35806), Gorkha Rifles

28. JC-196312 Subedar Debi Prasad Pradhan, Gorkha Rifles

29. JC-141560 Subedar Bhag Singh, Mahar Regiment
(*Posthumous*)

30. JC-178215 Subedar Chander Mani, Grenadiers
(*Posthumous*)

31. JC-185052 Subedar Jagat Singh, Kumaon
(*Posthumous*)

32. JC-3000057 Naib Subedar Nar Bahadur Rana, Assam Rifles

33. JC-629061 Naib Subedar Babu Ram Chhetri, Gorkha Rifles

34. JC-2200313 Naib Subedar Singh Bahadur Gurung, Assam Rifles

35. JC-448182 Naib Subedar Dhura Ram Verma Grenadiers
(*Posthumous*)

36. JC-2300089 Naib Subedar Salop Singh Kapruwan, Assam Rifles

37. JC-2850326 Naib Subedar Gopal Dutt Sharma, Assam Rifles

38. JC-592178 Naib Subedar Chhankar Singh, Jammu & Kashmir Light Infantry

39. 2666618 Company Havildar Major Pratap Singh, Grenadiers

40. 13674059 Havildar Suresh Singh, Guards

41. 4061180 Havildar Himmat Singh, Garhwal Rifles

42. 5843342 Havildar Dhan Bhadur Chhetri, Gorkha Rifles

43. 5243303 Havildar Em Bahadur Pun, Gorkha Rifles

44. 14540074 Havildar Bidya Sagar Singha, Electrical and Mechanical Engineers, (*Posthumous*)

45. 5842258 Havildar Krishna Bahadur Chhetri, Gorkha Rifles
(*Posthumous*)

46. 2675058 Naik Om Parkash, Grenadiers

47. 2586677 Naik Ashok Karoshi, Madras
(*Posthumous*)

48. 4464826 Naik Shokin Singh, Sikh Light Infantry
(*Posthumous*)

49. 4176173 Naik Bhawan Singh, Kumaon
(*Posthumous*)

50. 2587051 Naik Satheeshkumar M. Madras
(*Posthumous*)

51. 14481237 Lance Naik Raj Kumar, Artillery

52. 2679855 Lance Naik Ramawtar Singh, Grenadiers
(*Posthumous*)

53. 2475314 Lance Naik Chand Singh, Punjab

54. 4067365 Lance Naik Sate Singh Rawat, Garhwal Rifles
(*Posthumous*)

55. 2588922 Lance Naik Chinnappa Govindan, Madras
(*Posthumous*)

56. 4181521 Lance Naik Vijay Pal Singh, Kumaon
(*Posthumous*)

57. 9083461 Lance Naik Sher Ali Khan, Jammu and Kashmir Light Infantry

58. 2474802 Lance Naik Jagdev Singh, Punjab
(*Posthumous*)

59. 7239922 Acting Lance Dafedar Sukh Dev Ghosh, Remount Veterinary Corps

60. 2988959 Sepoy Bhom Singh, Mechanised Infantry
(*Posthumous*)

61. 2478211 Sepoy Kameker Singh, Punjab

62. 4362669 Sepoy Premen K Sangma, Assam Rifles

63. 4179555 Sepoy Shyam Singh, Kumaon
(*Posthumous*)

62. 4362669 Sepoy Premen K Sangma, Garhwal Rifles

65. 5753387 Rifleman Tas Bahadur Gurung, Gorkha Rifles
(*Posthumous*)

66. 104650 Rifleman Sandu Suradkar, Assam Rifles
(*Posthumous*)

67. 2887069 Rifleman Mahendra Singh, Rajputana Rifles

68. 5847350 Rifleman Prem Chhetri,
(*Posthumous*)

69. 2103088 Rifleman Rabi Thapa, Assam Rifles

70. 3101169 Rifleman Ramesh Prasad, Assam Rifles

71. 13750573 Rifleman Pawan Singh, Jammu and Kashmir Rifles
(*Posthumous*)

72. 2884654 Rifleman Surender Kumar, Rajputana Rifles
(*Posthumous*)

73. 2886000 Rifleman Kanwarpal Singh, Rajputana Rifles

74. 15307909 Sapper S. Gopal, Engineers

75. 13684229 Guardsman Ramvir Singh Bhadoria, Guards
(*Posthumous*)

76. 4173405 RPHM Mohan Singh, Kumaon
(*Posthumous*)

SUDHIR NATH,
Joint Secretary to the President

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 1996

No. 91-Pres/96.—President is pleased to approve the award of 'Nao Sena Medal/Naval Medal' to the undermentioned officers/personnel for acts of courage :—

1. Lieutenant Commander Deepak Daniel Pant (02485-Y)

SUDHIR NATH, Jt. Secy. to the President

New Delhi, the 15th August 1996

No. 92-Pres/96.—President is pleased to approve the award of 'Vayu Sena Medal/Air Force Medal' to the undermentioned officers/personnel for acts of courage :—

1. Wing Commander Bhupinder Singh Subhlok (13795) Flying (Pilot).

2. Wing Commander Ravi Krishan (13807) Flying (Pilot).

3. Squadron Leader Anand Gode (16231) Flying (Pilot)

4. Squadron Leader Philips Jacob (15725) Flying (Pilot)

5. Flying Officer Subroto Chaki (22321) Flying (Pilot)

Sudhir Nath, Jt. Secy. to the President

LOK SABHA SECRETARIAT

New Delhi-110001, the 12th November 1996

No. 4/1/3/COD/96.—Prof. Ram Kapse has been nominated to be a Member of the Departmentally Related Standing Committee on Defence for the year 1996-97 with effect from November 5, 1996.

V. N. GAUR, Director

PLANNING COMMISSION

(SOCIO-ECONOMIC RESEARCH UNIT)

New Delhi, the 18th October 1996

RESOLUTION

No. 0.15011/2/90-SER.—Reference Planning Commission's Resolution No. 0.15011/2/96-SER dt. 14th August, 1995.

1 The Planning Commission has decided to reconstitute its Research Advisory Committee set up to advise it on research in areas relating to Planning with immediate effect. Its composition and terms of reference are set out below: —

COMPOSITION

Chairman

1. Prof. Y. K. Alagh
   7, Ashoka Road,
   New Delhi-110001

Members

2. Prof. Susheela Bhan
   Director, Institute of Peace,
   Research & Action, 81 Gagan Vihar,
   Delhi-110057
3. Prof. S. S. Varde
   'Kapilavastu', Swami
   Vivekananda Marg, Bandra (W),
   Mumbai-400050
4. Dr. R. Radhakrishna
   Member-Secretary, ICSSR,
   Aruna Asaf Ali Marg,
   New Delhi-110067
5. Dr. A. Sarma
   Head, Delhi Centre, ISI,
   7, SJS Sansanswat Marg,
   New Delhi-110016
6. Dr. Rakesh Mohan
   Director-General,
   NCAER, 11, Parisila Bhavan,
   11, I.P. Estate,
   New Delhi-110002.
7. Dr. Bimal Jalan,
   Member Secretary (PC)
8. Prof. S. R. Hahsim,
   Member (PC)
9. Dr. J. S. Bajaj,
   Member (PC)
10. Sh. N. Parthasarthy,
    JS, FA (PC)

Member-Secretary

11. Dr. S. P. Pal, Adviser (PC)

2. In respect of research proposals which are generated internally in the Planning Commission, a Sub-Committee of the Research Advisory Committee shall be empowered to take the appropriate decisions. The composition of the Sub-Committee will be as follows : —

COMPOSITION OF SUB-COMMITTEE

Chairman

1. Prof. Y. K. Alagh

Members

2. Dr. Bimal Jalan, Member Secretary (PC)
3. Prof. S. R. Hashim, Member (PC)
4. Dr. J. S. Bajaj, Member (PC)
5. Sh. N. Parathasarthy, JS, FA (PC)

Member-Secretary

6. Dr. S. P. Pal, Adviser (PC)

TERMS OF REFERENCE

(i) To identify areas of research essential for palnning, identify scholars and institutions for undertaking research in these areas, get appropriate research projects formulated and process them for approval for financing by the planning commission;

(ii) To examine research study proposal received from institutions/scholars on their own in areas relevant to planning and advise on their suitability for financing by the Planning commission;

(iii) To advise on the research programmes that are financed in various research institutions by recurring block grants from the Planning commission i.e., those in the Gokhale Institute of Politics & Economics, Pune and the Department of Economics, Bombay University, Bombay etc;

(iv) To advise on the training and research-cum-training programmes organised in different research institutions with financial assistance from the Planning Commission;

(v) To consider the research programme of the Institute of Appiled Manpower Research with a view to dovetailing it with the other research studies sponsored by the Planning Commission.

(vi) to advise on the suitability of the completed studies for publication with financial assistance from the Planning Commission;

(vii) To advise on the suitability of financing, partly or wholly, seminars, which may be organised to discuss indentified development problems;

(viii) To build up internal research capacity of the Planning Commission and undertake research studies internally towards this end;

(ix) To coordinate the research and consultancy activities undertaken/sponsored by the dieffrent Divisions of the planning commission as well as those relevant to planning undertaken/sponsored by other central Ministries and other agencies;

(x) To coordinate information and data systems of Ministries and different government agencies (including NIC) and utilisation of their date-base for planning and policy purposes;

(xi) To support development of methodologies for planning exercise at the State and lower levels and promote training in the methodology of decentralised planning; and

(xii) To advise on any other matter relevant or incidental to the discharge of the above functions.

3. The terms of this Committee shall be for a period of three years unless otherwise notified by the Govt.

4. The committee may meet as often as may be decided by its Chairman. Normally, its meeting will be held at New Delhi.

5. The SocioEconomic Research Unit of the Planning Commission will function as the secretariat of the Committee.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India for general information.

A. S. LAMBA,
Director (Admn.)

MINISTRY OF INDUSTRY

DEPARTMENT OF INDUSTRIAL POLICY AND PROMOTION

New Delhi, the October 1996

RESOLUTION

No.07011/2/95-Salt.—In continuation of this Ministry's Resolution No. 07011/2/95-Salt dated 8th February, 1996 re-constituting the Central Advisory Board for salt, the Government of India have decided to nominate the following Members of the Parliament as Members of the Board in Substitution of entries at Sl. No. 28 to 30—under the category of persons having knowledge and experience in public affairs

1. Shri P. C. Chacko, MP (Lok Sabha)
2. Shri P. V. Rajendran, MP (Lok Sabha)
3. Shri Nilotpal Basu, MP (Rajya Sabha)
4. Shri P. Soundararajan, MP (Rajya Sabha).

ORDER

ORDERED that this Resolution be communicated to all State Governments, All Ministries of the Government of India, Planning Commission, Cabinet Secretariat and Prime Minister's Office.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India, Part-I, Section-1.

PRATIBHA KARAN,
Joint Secy.

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1996
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and Published by the Controller of Publications, Delhi, 1996.